वर्ष: 7 अंक: 08

16-31 अक्टूबर, 2026 (निःशुल्क)

न्यू इंडिया समाचार

हमें फॉलो करें @NISPIBIndia



राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष

एक भारत की शक्ति श्रेष्ठ भारत का संकल्प



सरदार पटेल की 150वीं जयंती के समापन-वर्ष में 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना सांस्कृतिक जुड़ाव से आगे नीति-निर्माण की आत्मा बनी, जिसने बीते 11 वर्षों में व्यवस्थाओं के एकीकरण से जन-जन के जीवन को बनाया सुगम, सहज, सशक्त और भरा भारतीयता का भाव...

आतंकवाद के खिलाफ भारत की 'जीरो-टॉलरेंस' नीति



'मन की बात' कार्यक्रम में न सिर्फ देशवासियों के सकारात्मक प्रयासों को मंच मिलता है बल्कि इसमें देश की उपलब्धियों की भी बात होती है। जब इस मंच से इनकी चर्चा होती है तब देश के दूसरे हिस्सों के लोग भी उससे प्रेरित होते हैं। 27 सितंबर को प्रसारित मन की बात की 138वीं कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सर्जिकल स्ट्राइक, डिजिटल जनगणना, भारतीय संस्कृति, प्राचीन मंदिरों, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, नशा मुक्ति अभियान, खेल, ओडीओपी और पोषण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। प्रस्तुत है मन की बात के संपादित अंश...

- **सर्जिकल स्ट्राइक :** दस वर्ष पहले 28-29 सितंबर, 2016 को भारतीय सेना ने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक की थी। एलओसी के उस पार जाकर हमारे वीर जवानों ने जिस तरह आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई की थी, वो देख दुनिया हैरान थी।
- **करारा जवाब :** बीते एक दशक में बालाकोट की एयर स्ट्राइक से लेकर 'ऑपरेशन सिंदूर' तक भारत ने बार-बार यह स्पष्ट संदेश दिया है कि अगर आतंकवादी भारत पर आंख उठाएंगे तो उसका करारा जवाब दिया जाएगा।
- **'जीरो-टॉलरेंस' नीति :** आज का भारत आतंकवाद के खिलाफ 'जीरो-टॉलरेंस' नीति लेकर चल रहा है। हम इसके नतीजे भी देख रहे हैं।
- **राम जन्मभूमि आंदोलन :** 'विश्व हिन्दू परिषद' के पूर्व अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्रद्धेय स्वर्गीय अशोक सिंहल जी ने राम जन्मभूमि आंदोलन को जो दिशा, आज उसी का परिणाम है कि हम अयोध्या में भव्य मंदिर को साक्षात देख रहे हैं।
- **प्रथम सूर्य ग्राम :** मोढेरा आज न केवल सूर्य मंदिर के लिए जाना जाता है, बल्कि गुजरात का ये गांव देश का प्रथम सूर्य ग्राम बन चुका है। मोढेरा आज सौर ऊर्जा से चलता है और उसने देश के सामने सस्टेनेबिलिटी का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।
- **पौष्टिक मुनगा :** छतीसगढ़ ने 'हर घर मुनगा-घर-घर मुनगा' अभियान शुरू किया है। इसमें लोगों को पौष्टिक मुनगा यानी मोरिंगा को अपने खान-पान में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- **नई संभावना :** आंवला आज उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में नई संभावनाओं का माध्यम बन रहा है। एक जिला, एक उत्पाद के माध्यम से यहां आंवले से जुड़े स्थानीय उद्यमों को बढ़ावा मिला है। आज प्रतापगढ़ में आंवला प्रोसेसिंग से जुड़ी करीब 100 यूनिट काम कर रही हैं।
- **अष्टविनायक यात्रा :** पंथौन थीरखानोन के प्रयासों से थाईलैंड के श्रद्धालुओं के बीच अष्टविनायक यात्रा लोकप्रिय हो चुकी है। वर्ष 2002 में उन्होंने उत्तरी थाईलैंड के चियांग माई में गणेश हिमाल म्यूजियम की स्थापना की। आज इसमें 10 हजार से अधिक गणेश प्रतिमाएं हैं।
- **नशा मुक्ति अभियान :** 'नशा मुक्त युवा अभियान' के तहत देश के लाखों युवाओं ने नशे के खिलाफ, एक महत्वपूर्ण संकल्प लिया है। युवाओं ने खुद भी नशे से दूर रहने की प्रतिज्ञा ली है और इस संदेश को दूसरों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भी ली है।
- **प्रेरक मिसाल :** प्रकृति के साथ हमारा रिश्ता सिर्फ उसे सहेजने तक सीमित नहीं है। कई बार हम प्रकृति को संभालते हैं तो वही प्रकृति हमारे जीवन का सहारा बन जाती है। पश्चिम बंगाल के सुंदरबन में कुछ महिलाएं इसी रिश्ते की प्रेरक मिसाल पेश कर रही हैं।
- **हाथियों के झुंड :** असम में सोनाई रुपाई वन्यजीव अभयारण्य है। हाथी यहां फिर लौट आए हैं। जिस इलाके में बरसों से उनकी चहल-पहल नहीं थी, आज वहां फिर हाथियों के झुंड दिखाई दे रहे हैं।

'मन की बात' पूरी सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

न्यू इंडिया
समाचार

वर्षः 7, अंकः 08 । 16-31 अक्टूबर, 2026

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा
प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

मुख्य सलाहकार संपादक
संतोष कुमार

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक
पवन कुमार

सहायक सलाहकार संपादक
अखिलेश कुमार
चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन
सुमित कुमार (अंग्रेजी)
रजनीश मिश्रा (अंग्रेजी)
नदीम अहमद (उर्दू)

सीनियर डिजाइनर
फूलचंद तिवारी

डिजाइनर
सत्यम सिंह
अनिल कुमार



13 भाषाओं में उपलब्ध न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने के लिए क्लिक करें।

https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

न्यू इंडिया समाचार के पुराने अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें

https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx

न्यू इंडिया समाचार के बारे में लगातार अपडेट के लिए फॉलो करें: @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर...



एक भारत-श्रेष्ठ भारत

सांस्कृतिक मेल से व्यवस्था के एकीकरण तक

एकता राष्ट्र और समाज के अस्तित्व का आधार होती है। 31 अक्टूबर 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर केवड़िया की पावन धरती से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की शुरुआत की थी। सरदार पटेल ने जिस तरह करीब साढ़े पांच सौ रियासतों को एक झंडे तले जोड़ा था। उसी सोच से 11 वर्ष पूर्व शुरू हुई 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' से अब कर व्यवस्था, राशन, पेंशन, संविधान, परीक्षा और शोध तक जैसी दर्जनों पहल "एक देश-एक व्यवस्था" का बन गई है आधार स्तंभ... | 10-27

सेमीकॉन इंडिया 2026

सेमीकंडक्टर का इकोसिस्टम

खोल रहा नवाचार, निवेश और विकास के नए अवसर

पीएम मोदी ने देश-विदेश के प्रतिभाशाली युवाओं को आधुनिक तकनीक के विकास में साझेदार बनने का किया आह्वान | 32-33



विशेष : पीएम का आलेख

"श्री अशोक सिंहल जी का व्यक्तित्व दृढ़ संकल्प और सादगी का अद्भुत संगम था"



पीएम मोदी ने अशोक सिंहल की जयंती पर उनके जीवन और विचारों को समर्पित श्रद्धांजलि स्वरूप लिखा एक लेख किया साझा | 7-9

समाचार सार | 4-5

व्यक्तित्व : कोमाराम भीम
जिन्होंने दिया जल,जंगल, जमीन का नारा | 6

रबी फसलों के MSP में बढ़ोतरी, ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर फेज-III को मंजूरी
केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय | 28-29

भविष्य के लिए युवाओं को तैयार कर रही है भारत सरकार
51,000 से अधिक नियुक्ति पत्र रोजगार मेले में वितरित | 30-31

कनेक्टिविटी भी... आत्मनिर्भर भारत को मजबूती भी
'उड़ान' के 10 वर्ष : भारत की आकांक्षाओं का उत्सव | 34-35

बंगाल की महिलाओं का नया सामर्थ्य
अन्नपूर्णा योजना की 3,000 रुपये की चौथी किस्त जारी | 36-37

विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण
जलवायु परिवर्तन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पीएम मोदी का संबोधन | 38-39

राजधानी की कनेक्टिविटी को नई रफ्तार
गृह मंत्री अमित शाह ने किया बारापुला फेज-3 एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन | 42

72वां राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

भारतीय फिल्मों में भविष्य की संभावनाएं



राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार वितरित किए | 40-41



प्रकाशक: कंचन प्रसाद, महानिदेशक, सीबीसी (केंद्रीय संचार ब्यूरो)। **पत्राचार और ईमेल के लिए पता:** कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003. **ईमेल-** response-nis@pib.gov.in आर. एन. आई. नंबर DELHIN/2020/78812

संपादक की कलम से...

सरदार पटेल का विचार, एकता का आधार
एक भारत-श्रेष्ठ भारत के 11 वर्ष

सादर नमस्कार

एक राष्ट्र केवल मानचित्र या भौगोलिक रेखाओं से नहीं बनता, वह बनता है समग्रता की भावना से। यही भरोसा भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल ने आजादी के तत्काल बाद स्थापित किया था, जब उन्होंने 550 से अधिक बिखरी रियासतों को एक राष्ट्र की डोर में पिरोया। सरदार पटेल मानते थे कि इतिहास लिखने में समय नहीं गंवाना चाहिए, बल्कि इतिहास बनाने के लिए मेहनत करनी चाहिए। यही भावना उनके निर्णयों में भी झलकती थी।

व्यवहार में यथार्थवादी, संकल्प में सत्यवादी, कार्य में मानवतावादी और ध्येय में राष्ट्रवादी सरदार पटेल के लिए एक भारत-श्रेष्ठ भारत का विचार सर्वोपरि था। इसी भावना का प्रतीक है स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, जिसके निर्माण में देश भर के किसानों के खेतों में उपयोग हुए औजारों का लोहा एकत्र किया गया।

उसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए 31 अक्टूबर 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केवड़िया से एक भारत-श्रेष्ठ भारत का संकल्प लिया। बीते 11 वर्षों में यह संकल्प नीति-दर-नीति साकार होता गया। एक कर व्यवस्था ने राज्यों के बाजारों को जोड़ा, वन रैंक वन पेंशन ने सैनिकों के बीच दशकों पुरानी असमानता मिटाई, अनुच्छेद 370 निष्प्रभावी कर जम्मू-कश्मीर सहित पूरे देश को एक समान संवैधानिक अधिकार दिए और पूरे देश में भारतीय मानक समय (आईएसटी) को एक समान समय संदर्भ प्रदान करने के लिए नियम बनाए गए। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं पर बल और तमिल, तेलुगु, संस्कृत, मलयालम, ओड़िया और कन्नड़ के साथ मराठी, बांग्ला, असमिया, पाली तथा प्राकृत को शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा देना भी इसी एकता को मजबूत करता है। तीव्र गति से बन रहे रेल, रोड, हाईवे और इंटरनेट नेटवर्क ने भी गांवों को शहरों से जोड़ते हुए इसी एकता को बल पहुंचाया है।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जब 31 अक्टबूर को सरदार पटेल की जयंती मनाई जा रही है तब यह अवसर केवल उनके स्मरण का नहीं, संकल्प के नवीकरण का भी है। ऐसे में 11 वर्ष पहले उपजी एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना कैसे नीति-निर्माण और व्यवस्थाओं के एकीकरण का संकल्प बन गई, यही इस बार राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में हमारी आवरण कथा बनी है।

इसके अलावा व्यक्तित्व की कड़ी में जल, जंगल, जमीन का पहली बार नारा देने वाले कोमाराम भीम, केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय, फ्लैगशिप में उड़ान योजना के 10 साल पर विशेष सामग्री और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पखवाड़े भर के कार्यक्रमों को इसमें शामिल किया गया है।

साथ ही, पत्रिका के इनसाइड पेज पर मन की बात और बैक कवर पर 21 अक्टूबर को आजाद हिंद सरकार के स्थापना दिवस पर विशेष सामग्री समाहित है।

आप अपने सुझाव हमें भेजते रहें।

(धीरेन्द्र ओझा)

हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

आपकी बात...





खुद को अपडेट रखने में बहुत उपयोगी न्यू इंडिया समाचार पत्रिका

मैं 'न्यू इंडिया समाचार' का नियमित पाठक हूं और यह पत्रिका भारत सरकार की योजनाओं, नीतियों और समसामयिक मामलों के बारे में खुद को अपडेट रखने के लिए बहुत उपयोगी लगती है। यह पत्रिका देश की तरक्की के बारे में मेरी जानकारी बढ़ाती है। मुझे एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर ज्यादा समझने और हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करती है।

निवेश गोयल

goyalnivesh98@gmail.com

नए अंक का बेसब्री से रहता है इंतजार

मुझे न्यू इंडिया समाचार पत्रिका पढ़ना बहुत पसंद है। मैं इसके नए अंक का बेसब्री से इंतजार करता हूं। हर बार इसे पढ़ने पर मुझे भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता के बारे में अधिक जानने को मिलता है। साथ ही, यह पत्रिका भारत की विकास की संभावनाओं को भी दिखाती है। यह बताती है कि कैसे देश 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य को पाने के लिए हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

shivanshchouhan397@gmail.com

हमारे लक्ष्यों के सफर का एक स्टैंडर्ड डॉक्यूमेंट

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका पहली बार लगभग पूरी पढ़ी। अब इंतजार रहेगा कि अगला मेल कब मिलता है। इसमें बहुत काम की खबर मिलती है। देश के विकास के कभी न रुकने वाले सफर की कहानी और हमारे लक्ष्यों के सफर का एक स्टैंडर्ड डॉक्यूमेंट। भारत हमेशा से ज्ञान का केंद्र रहा है। मेरा एक सुझाव है कि विकास की जड़ संचित करने के लिए बाल विकास भी जरूरी है। इसलिए बाल विकास परंपरा को हमारी इस पत्रिका में जगह मिलनी चाहिए ताकि इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से भविष्य को और सुरक्षित किया जा सके।

nanda.purnimaa@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित होती है विस्तृत जानकारी

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका सात साल से प्रकाशित हो रही है। यह बहुत पढ़ी जाने वाली पाक्षिक पत्रिका है। इसमें अलग-अलग स्कीम, बड़े प्रोजेक्ट, नई एजुकेशनल पॉलिसी, कानून में बड़े बदलाव, पर्यावरण की रक्षा के लिए की गई कोशिशों और ग्लोबल लेवल पर मजबूत ट्रेड रिलेशन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रकाशित होती है। इस पत्रिका से मेरी जानकारी और बढ़ी है।

योगेश्वर बुवा

buwayogesh82@gmail.com

पत्राचार और ईमेल के लिए पता: कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003

ईमेल- response-nis@pib.gov.in

समाचार सार

पीएम विश्वकर्मा योजना

'सम्मान, सामर्थ्य और समृद्धि' के तीन वर्ष, 30 लाख कारीगर पंजीकृत







देश में कारीगरों का सम्मान, सामर्थ्य और उनकी समृद्धि बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना से शुरुआती तीन वर्ष में ही 30 लाख से अधिक कारीगर जुड़ गए हैं। 17 सितंबर 2023 को शुरू हुई इस योजना में करीब 24.50 लाख लोगों को बुनियादी कौशल प्रशिक्षण दिया गया है। वहीं, इंडिया पोस्ट के माध्यम से 18.15 लाख आधुनिक टूलकिट वितरित किए जा चुके हैं।

कोलकाता में पीएम विश्वकर्मा योजना की तीसरी वर्षगांठ पर केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री जीतन राम मांझी ने बताया कि 6.18 लाख विश्वकर्मा लाभार्थियों को 5 प्रतिशत वार्षिक रियायती ब्याज दर पर 1 लाख रुपये तक का ऋण दिया गया है जिसकी कुल राशि 5,297 करोड़ रुपये है। यह योजना पश्चिम बंगाल में मई 2026 से लागू करने का निर्णय लिया गया जिसके तहत 7 लाख से अधिक लोगों ने आवेदन किए हैं।

प्रोजेक्ट चीता के बाद अब 'प्रोजेक्ट राइनो' की शुरुआत

असम देश का एकमात्र ऐसा स्थान है जहां दुनिया के करीब 80% एक सींग वाले गैंडे पाए जाते हैं। यही कारण है कि विश्व गैंडा दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असम के काजीरंगा में शिकार रोकने के प्रयासों की तारीफ की और देश में गैंडों के संरक्षण को और मजबूत करने के लिए 'प्रोजेक्ट राइनो' शुरू करने की घोषणा की।

'प्रोजेक्ट राइनो' के तहत गैंडों वाले राज्यों को आर्थिक और तकनीकी मदद दी जाएगी। इसके जरिए गैंडों की सुरक्षा, उनके रहने के ठिकानों की देखभाल, उनकी नस्ल सुधारने और उनकी संख्या पर नजर रखने जैसे काम होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बताया कि बिहार और पश्चिम बंगाल के कुछ इलाकों में गैंडे या तो वापस लौट आए हैं या उनकी अच्छी देखभाल हो रही है। उत्तर प्रदेश के दुधवा में भी गैंडों को दोबारा बसाने की कोशिश कामयाब रही है। उन्होंने कहा कि ये सफलताएं वन्यजीवों की रक्षा और उनकी बेहतर देखभाल के प्रति लोगों के लगातार समर्पण को दिखाती हैं।



विदेशों में रोजगार के लिए भारत में कौशल विकास

भारत सरकार न सिर्फ देश में रोजगार के अवसर बढ़ा रही है बल्कि विदेशों में उपलब्ध अवसरों के हिसाब से युवाओं को कौशल विकास से जोड़ रही है। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) ने अब तक करीब 20 देशों के साथ कुशल नौकरी भूमिकाओं को उनकी मांग के अनुरूप बनाने की प्रक्रिया शुरू की है।

नीति आयोग के मई 2026 के कार्य-पत्र के अनुसार, भारत की प्रवासी आबादी 1.85 करोड़ है। एमएसडीई ने आठ देशों-ऑस्ट्रेलिया, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, जापान, कतर, सिंगापुर और यूएई के साथ कौशल एवं प्रशिक्षण सहयोग के लिए समझौते किए हैं। वहीं विदेश मंत्रालय ने 22 प्रवासन और श्रम गतिशीलता समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनमें कौशल विकास संबंधी विशिष्ट प्रावधान शामिल हैं।

MY भारत से जुड़े 3 करोड़ युवा... भागीदारी का मजबूत संकल्प

युवा सहभागिता के सबसे बड़े प्लेटफॉर्म में से एक 'मेरा युवा भारत' (**https://mybharat.gov.in/**) से तीन वर्ष से भी कम समय में 3 करोड़ से अधिक युवा जुड़ गए हैं। यह उपलब्धि नेतृत्व, अनुभवात्मक लर्निंग, स्वयंसेवा, नागरिक सहभागिता और राष्ट्र-निर्माण से जुड़े अवसरों में युवाओं की बढ़ती भागीदारी का प्रतीक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 अक्टूबर 2023 को **My** भारत का शुभारंभ किया था। **My** भारत के माध्यम से 'विकसित भारत युवा नेता संवाद 2027' जैसी पहल चलाई जा रही है, जो युवाओं को विचार, रचनात्मकता, नेतृत्व और नवाचार प्रदर्शित करने के अवसर देती है। इसकी शुरुआत विकसित भारत क्विज से 17 अगस्त 2026 को हुई।



भारत की बिजली से नेपाल रोशन

पड़ोसी प्रथम की भावना के तहत भारत ने अब नेपाल को प्रतिदिन 18 घंटे (रात 12 बजे से शाम 6 बजे तक) बिजली आपूर्ति शुरू कर दी है। यह फैसला भारत और नेपाल के बीच घनिष्ठ और दीर्घकालिक ऊर्जा सहयोग को और मजबूत करेगा।

विद्युत मंत्रालय ने नेपाल विद्युत प्राधिकरण को 13 सितंबर से बिजली निर्यात शुरू कर दिया है जो 31 दिसंबर, 2026 तक यूं ही जारी रहेगी। जनवरी 2027 से बिजली की कितनी मात्रा और कितनी देर तक आपूर्ति की जाएगी, इसकी समीक्षा बैठक दिसंबर, 2026 में की जाएगी। नेपाल में आई बाढ़ आपदा के बाद वहां बिजली इंफ्रास्ट्रक्चर को भारी निकसान हुआ और बिजली आपूर्ति प्रभावित हुई है। मुजफ्फरपुर-ढालकेबर 400 केवी डीसी लाइन से 600 मेगावाट तक और तनकपुर-महेंद्रनगर 132 केवी एस/सी लाइन से 54 मेगावाट तक बिजली दी जाएगी।



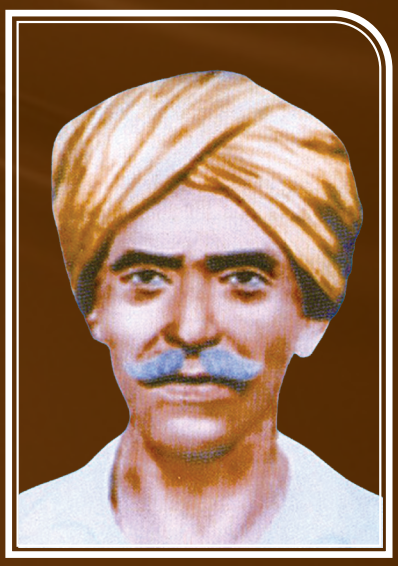
भारत में मृदा कार्बन के लिए पहली बार किसानों को पैसा

पंजाब और हरियाणा में पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने वाले खेती के नए तरीके अपनाए गए, जिससे किसानों को आर्थिक लाभ हुआ। मिट्टी की सेहत सुधारने वाली इस अनूठी पहल के तहत 2,500 से अधिक किसानों को 3,000 से 15,000 रुपये के हिसाब से कुल लगभग 2.9 करोड़ रुपये दिए गए। देश में पहली बार शुरू हुआ यह कार्यक्रम अब 7 राज्यों में 1 लाख से अधिक किसानों और 20 लाख (2 मिलियन) एकड़ से ज्यादा जमीन तक फैल चुका है।

इस कार्यक्रम की शुरुआत पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (लुधियाना) से हुई थी। इसके तहत किसानों को यह भुगतान 'ग्रो इंडिगो' के 'आदि' कार्बन कार्यक्रम के जरिए मिल रहा है, जो 2019 में शुरू हुआ था। 2019 से 2022 के दौरान किसानों ने धान की सीधी बुवाई, कम जुताई और पराली प्रबंधन जैसी तकनीकें अपनाईं। कार्यक्रम के अनुसार, इन तरीकों से 45 अरब लीटर पानी बचा, 2 लाख टन से ज्यादा पराली जलने से रुकी और हवा में करीब 1,000 टन हानिकारक **PM**2.5 कणों का उत्सर्जन भी कम हुआ। ■



जिन्होंने दिया जल, जंगल, जमीन का नारा



साहस और बलिदान की मिसाल माने जाने वाले कोमाराम भीम एक वीर आदिवासी योद्धा थे जिन्होंने पहली बार जल, जंगल और जमीन का नारा दिया था। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने दम पर हैदराबाद के निजाम और ब्रिटिश राज के खिलाफ संघर्ष का बिगुल फूंक दिया था। गोरिल्ला युद्ध से संघर्ष किया था। कोमाराम भीम को गोंड संस्कृति में एक देवता के रूप में पूजा जाता है। विद्रोह और संघर्ष के प्रतीक बने भीम ने लाखों लोगों, विशेषकर आदिवासी समुदाय के दिलों पर छोड़ी अमिट छाप...

जन्म : 22 अक्टूबर 1901, मृत्यु : 8 अक्टूबर 1940

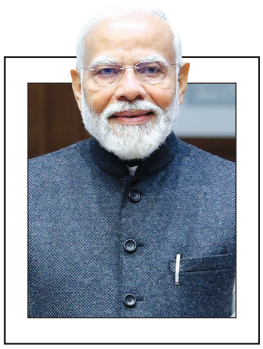
अत्याचार और शोषण के खिलाफ आंदोलन करने वाले कोमाराम भीम एक ऐसे व्यक्ति रहे हैं जिन्हें लोग और खासतौर पर आदिवासी आज भी भगवान की तरह पूजते हैं। 22 अक्टूबर 1901 को वर्तमान तेलंगाना में कोमाराम भीम जिले के संकेपल्ली गांव में एक गोंड आदिवासी परिवार में कोमाराम भीम का जन्म हुआ। उन्होंने निजाम और अंग्रेज के दमनकारी शासन के खिलाफ भीषण संघर्ष किया। एक जमींदार के अत्याचार का विरोध करते हुए भीम को अपना गांव छोड़ना पड़ा। वे असम के चाय बागानों तक पहुंच गए। वहां उन्होंने मजदूरों की पीड़ा देखी और कई आंदोलनों से प्रेरणा ली। उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा और समझा कि संगठित संघर्ष ही अन्याय के खिलाफ सबसे बड़ा हथियार है। जब वे वापस लौटे तो उन्होंने अपने समाज को जागृत करने का संकल्प लिया।

वर्ष 1926 से लेकर 1940 तक उन्होंने गोरिल्ला युद्ध के जरिए लगातार निजामी शासन के खिलाफ छापामार अभियान चलाया। जंगलों में एक गुरिल्ला सेना बनाने वाले कोमाराम ने तीर-कमान, भाले और पारंपरिक हथियारों से निजाम की आधुनिक सेना को चुनौती दी। भीम गांव-गांव जाकर अत्याचार के खिलाफ लोगों को एकजुट करते थे। कई बार सैनिक गांवों में टैक्स लेने पहुंचे लेकिन भीम और उनके साथियों ने उन्हें खदेड़ दिया।

माना जाता है कि वे अल्लूरी सीताराम राजू से काफी प्रभावित थे। देश की रक्षा करते हुए 8 अक्टूबर 1940 को अश्विनी पूर्णिमा के दिन हुए एक जबरदस्त युद्ध में छल और कपट से निजाम की सेना ने उनकी हत्या कर दी। 2016 में आसिफाबाद जिले का नाम बदलकर कोमाराम भीम आसिफाबाद जिला किया गया। यहां पर एक स्मारक और कोमाराम भीम संग्रहालय की स्थापना की गई है। हर वर्ष आश्विन पूर्णिमा के दिन गोंड समुदाय उनकी पुण्यतिथि मनाता है। इस अवसर पर जोडेघाट में विशेष आयोजन किया जाता है। यही वह स्थान है जहां 1940 में कोमाराम भीम की मृत्यु हुई थी।

26 अक्टूबर 2025 को मन की बात की 127वीं कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोमाराम भीम को याद किया था। उन्होंने कहा था कि मैं जिस महान विभूति की चर्चा कर रहा हूं उनका नाम है कोमाराम भीम। 22 अक्टूबर को उनकी जन्म-जयंती है। कोमाराम भीम की आयु बहुत लंबी नहीं रही। वो महज 40 वर्ष ही जीवित रहे लेकिन अपने जीवन-काल में उन्होंने अनगिनत लोगों, विशेषकर आदिवासी समाज के हृदय में अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने निजाम के खिलाफ संघर्ष कर रहे लोगों में नई ताकत भरी। वे अपने रणनीतिक कौशल के लिए भी जाने जाते थे। निजाम की सत्ता के लिए वे बहुत बड़ी चुनौती बन गए थे। युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक से अधिक जानने का प्रयास करें। उन्होंने आगे कहा कोमाराम भीम की ना विनम्र निवाली। आयन प्रजल हृदयाल्लों... एप्पटिकी निलिचि-वूंटारू। इसका हिंदी में शाब्दिक अर्थ है - कोमाराम भीम जी को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि, वे हमेशा लोगों के दिलों में बसे रहेंगे। ■

“श्री अशोक सिंहल जी का व्यक्तित्व दृढ़ संकल्प और सादगी का अद्भुत संगम था”



नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर को अशोक सिंहल की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके दृढ़ विश्वास, सादगी तथा सामाजिक एकता के प्रति अटूट समर्पण को याद किया। इस वर्ष 27 सितंबर से अशोक सिंहल की जन्म शताब्दी वर्ष की शुरुआत हुई है। इस अवसर पर उन्होंने उनके अथक संगठनात्मक कार्यों को स्मरण करते हुए, उनके जीवन और विचारों को समर्पित श्रद्धांजलि स्वरूप लिखा गया एक लेख साझा किया।

एक बहुत सुंदर सुभाषित है, “वृक्ष कबहुं नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर। परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।” इसका मतलब है कि पेड़ कभी अपने फल स्वयं नहीं खाता, नदी अपना जल अपने पास नहीं रखती। इसी तरह, संत स्वभाव के लोग भी स्वयं को प्राथमिकता न देते हुए, सदैव दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं, अपना जीवन लोक कल्याण के लिए समर्पित कर देते हैं। सदियों से हमारे ऋषियों ने हमें यही सिखाया है कि मानवता के कल्याण के लिए समर्पित जीवन का महत्व व्यक्तिगत उपलब्धियों से कहीं अधिक होता है। श्रद्धेय अशोक सिंहल जी का जीवन इस भावना का पुण्य उदाहरण है।

27 सितंबर से हम स्वर्गीय अशोक सिंहल जी का जन्म-शताब्दी वर्ष मनाने जा रहे हैं। यह एक महान विभूति के सम्मान का सुअवसर है। उन्होंने आध्यात्मिक साधना, सांस्कृतिक जागरण और दशकों तक समर्पित भाव से समाज एवं संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाया।

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मुझे स्वर्गीय अशोक जी के साथ लंबे समय तक कार्य करने, उनसे सीखने, उनसे संवाद करने और उनका स्नेह प्राप्त करने का अवसर मिला। मुझे 1981 का एक प्रसंग याद आता है। उस समय मैं एक युवा कार्यकर्ता के तौर पर संगठन की ओर से मिली जिम्मेदारियां निभा रहा था। तब मुझे अशोक जी का हाथ से लिखा एक पत्र मिला। उन्होंने पत्र में आने वाले एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी थी और मुझे कुछ जिम्मेदारियां सौंपी थीं। उस समय अशोक सिंहल जी से पत्र पाना, मेरे लिए बहुत विशेष और यादगार क्षण बन गया था।

मैंने उन्हें कई दशकों तक दिन-रात काम करते देखा। वे देश के दूर-दराज के क्षेत्रों की लंबी और कई बार कठिन यात्राएं किया करते थे। गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में जाना उन्हें विशेष रूप से प्रिय था। वे लगातार इस पर चिंतन करते थे कि समाज के वंचित और अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों के लिए और क्या किया जा सकता है। जब भी देश में

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मुझे स्वर्गीय अशोक जी के साथ लंबे समय तक कार्य करने, उनसे सीखने, उनसे संवाद करने और उनका स्नेह प्राप्त करने का अवसर मिला।

प्रधानमंत्री का आलेख पढ़ने के लिए QR कोड स्कैन करें।



प्रयागराज में पले-बढ़े अशोक जी कई घंटे संगम के तट पर बैठा करते थे। नदी के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण था। वहां आने वाले साधु-संत और श्रद्धालुओं से भी उनकी बहुत आत्मीयता थी।

कहीं प्राकृतिक आपदा आती, तो अशोक सिंहल जी सबसे पहले वहां पहुंचने वालों में होते या फिर प्रभावित लोगों की सहायता के लिए कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन देते। वर्ष 2001 में कच्छ में आए भूकंप के बाद उनके साथ का मेरा अनुभव अविस्मरणीय बन गया।

आदरणीय अशोक जी अत्यंत प्रतिष्ठित और संपन्न परिवार से थे। उनके पिता श्री महावीर जी की एक प्रशासक के रूप में पहचान थी। उनके एक भाई श्री बी.पी. सिंहल जी पुलिस अधिकारी बने और बाद में संसद सदस्य भी रहे। दूसरे भाई श्री वी.पी. सिंहल जी त्रिपुरा के तब मुख्य सचिव बने, जब यह नया राज्य बना था। परिवार के अन्य सदस्यों ने भी कॉमर्स और कृषि के क्षेत्र में सफलता हासिल की। लेकिन शुरू से ही अशोक जी का झुकाव बिल्कुल अलग दिशा में था। बहुत कम उम्र में ही उनके व्यवहार में दूसरों के प्रति करुणा और सेवा की अद्भुत भावना दिखने लगी थी। वे चाहते थे कि भारत का पुनरुत्थान हो और मां भारती की संतान गौरवशाली उपलब्धियां हासिल करें। प्रयागराज में पले-बढ़े अशोक जी कई घंटे संगम के तट पर बैठा करते थे। नदी के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण था। वहां आने वाले साधु-संत और श्रद्धालुओं से भी उनकी बहुत आत्मीयता थी। इससे भारत के सांस्कृतिक लोकाचार की उनकी समझ और समृद्ध हुई। समाज के लिए कुछ करने का उनका संकल्प भी और दृढ़ हुआ। दूसरों के लिए जीने की यही ललक उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ले आई। उनको जो भी जिम्मेदारी मिली, उसे उन्होंने पूरे उत्साह, अनुशसन और कर्तव्यभाव से निभाया।

श्री अशोक सिंहल जी ने अपने निरंतर प्रयास और अथक परिश्रम से अनेक संस्थाओं और आंदोलनों को मजबूत किया। अपनी ओजस्वी वाणी और अभिव्यक्ति की अद्भुत शैली से वे पूरी सभा को मंत्रमुग्ध कर देते थे। अपने साथी कार्यकर्ताओं के प्रति वे अत्यधिक स्नेह रखते थे। जो भी उनके संपर्क में आता, वह उनकी सादगी से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। संत समाज के साथ उनके संबंध बहुत प्रगाढ़ थे। देशभर के साधु-संतों के बीच भी उनका काफी सम्मान था। संतगण उनके परामर्श को महत्व देते थे और उनकी बातों को पूरे आदरभाव से सुनते थे।

मेरी स्मृति में ऐसी दो घटनाएं उभर रही हैं, जिनसे श्री अशोक सिंहल जी के विराट व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। पहली घटना 1993 की है। विश्व हिंदू परिषद ने स्वामी विवेकानंद जी के शिकागो संबोधन के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में अमेरिका में एक सम्मेलन आयोजित किया था। विदेश में ऐसे भव्य सम्मेलन का विजन, उसकी प्लानिंग और विभिन्न समूहों को एक मंच पर लाने का भगीरथ प्रयास श्री अशोक जी के अद्वितीय संगठनात्मक कौशल का परिचायक था।





आज अयोध्या में भव्य राम मंदिर है, तो इसके पीछे अशोक जी जैसी विभूतियों का निस्वार्थ समर्पण है, जिन्होंने इसे संभव बनाने के प्रयास में स्वयं को पूरी तरह खपा दिया।

दूसरी घटना वर्ष 2000 की है, जब त्रिनिदाद और टोबैगो के पोर्ट ऑफ स्पेन में विश्व हिंदू सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उस समय मैं भी वहीं था। मैंने प्रत्यक्ष देखा कि अशोक सिंहल जी की उपस्थिति ने अन्य प्रतिनिधियों में कितना उत्साह भर दिया था। मेरे संबोधन के बाद उन्होंने जिस तरह मेरी सराहना की, वो मेरे लिए बहुत भावुक कर देने वाला अनुभव था। मैंने एक बार फिर अनुभव किया कि उनका प्रोत्साहन किस तरह हर कार्यकर्ता को नई ऊर्जा से भर देता था।

राम जन्मभूमि आंदोलन में श्री अशोक सिंहल जी की ऐतिहासिक भूमिका का स्मरण किए बिना उनका कोई भी उल्लेख अधूरा है। वर्ष 1991 की बोट क्लब रैली में दिए गए उनके ओजस्वी संबोधन को कौन भूल सकता है? या आंदोलन के चरम पर लहूलुहान और घायल अवस्था में अशोक जी की वह ऐतिहासिक तस्वीर भला किसकी स्मृति से मिट सकती है? आज अयोध्या में भव्य राम मंदिर है, तो इसके पीछे अशोक जी जैसी विभूतियों का निस्वार्थ समर्पण है, जिन्होंने इसे संभव बनाने के प्रयास में स्वयं को पूरी तरह खपा दिया। आज यदि अशोक जी हमारे बीच होते तो अयोध्या में राम मंदिर को देखकर वो सबसे अधिक भावुक एवं प्रसन्न होते।

स्वर्गीय अशोक सिंहल जी के विचार बहुत सुलझे हुए थे। वे स्पष्ट रूप से मानते थे कि समाज में समरसता के साथ ही भाईचारे का संदेश मजबूत होना चाहिए। उन्होंने सामाजिक एकता और समानता के लिए निरंतर कार्य किया। उनका साफ मत था कि समाज में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति समान गरिमा व सम्मान का अधिकारी है। यही वजह थी कि उन्होंने अयोध्या में राम मंदिर की पहली ईंट रखने को लेकर अपने विचार को स्पष्ट रूप से रखा। उन्होंने ही कहा था कि यह पुनीत कार्य बिहार के वीएचपी कार्यकर्ता और वंचित वर्ग से आने वाले श्री कामेश्वर चौपाल जी के हाथों से हो। काशी में एक धर्म संसद के दौरान उन्होंने डोम राजा को सम्मानित करने का फैसला किया और कई सामुदायिक अभियानों में उनके साथ मिलकर काम किया।

राष्ट्र-निर्माण के साथ ही श्री अशोक सिंहल जी के दो ऐसे प्रिय क्षेत्र थे, जो उनके हृदय के अत्यंत निकट थे। शिक्षा (विशेषकर वैदिक शिक्षा) और संगीत, इन दोनों से उनका गहरा लगाव था। वाराणसी के सांसद के रूप में मुझे इस बात पर अत्यंत गर्व की अनुभूति होती है कि जहां का मैं प्रतिनिधित्व करता हूं, उस शाश्वत काशी ने श्री अशोक सिंहल जी के जीवन में एक अहम भूमिका निभाई। उन्होंने बीएचयू से शिक्षा प्राप्त की थी और वे एक मेधावी छात्र के रूप में जाने जाते थे। वे एकल विद्यालय की पहल से भी गहराई से जुड़े थे, जिसने दूर-दराज के गांवों, खासकर जनजातीय समुदायों तक बुनियादी शिक्षा पहुंचाने का कार्य किया। वे जितने गहरे अध्येता और उत्साही पाठक थे, उतने ही अच्छे श्रोता भी थे। वे युवा कार्यकर्ताओं को सदैव पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहते थे।

आदरणीय अशोक जी को निकट से जानने वालों को पता है कि वे कितना सुंदर गाते थे। मुझे नागपुर की उन बैठकों की याद आती है, जिसमें वे 'एकल गीत' गाया करते थे। उनका गायन सभी को मंत्रमुग्ध कर देता था और पूरी बैठक में नई ऊर्जा भर जाती थी। वर्ष 2015 में उनके 90वें जन्मदिवस समारोह का एक वीडियो खूब वायरल हुआ था, जिसमें उन्होंने 'हे मातृभूमि मेरी, हे पितृभूमि मेरी' गाकर सभी को चौंका दिया था।

स्वर्गीय अशोक सिंहल जी ने अपने जीवन में हर क्षण इस महान राष्ट्र के उत्कर्ष का ही स्वप्न देखा था। उनके आदर्शों से आज भी हमें ये प्रेरणा मिलती है। उनकी जन्मशती के इस पावन अवसर पर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अधिक से अधिक युवा उनके विराट व्यक्तित्व और महानता से परिचित हों। आइए, हम अपने राष्ट्र और देशवासियों के लिए अशोक सिंहल जी के सपनों को साकार करने के संकल्प को एक बार फिर दोहराएं। ■

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष

आवरण कथा

एक भारत-श्रेष्ठ भारत

सांस्कृतिक मेल से व्यवस्था के एकीकरण तक



एकता राष्ट्र और समाज के अस्तित्व का आधार होती है। जब तक समाज में एकता है, राष्ट्र की अखंडता सुरक्षित है। इसलिए विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए, एकता सर्वोपरि आधार है। 31 अक्टूबर 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर केवड़िया की पावन धरती से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की शुरुआत की थी। तब यह भाषा, संस्कृति और परंपरा के आदान-प्रदान की एक कोशिश भर लगती थी। लेकिन बीते एक दशक से अधिक समय में यही भावना शासन की आत्मा बन गई। सरदार पटेल ने जिस तरह करीब साढ़े पांच सौ रियासतों को एक झंडे तले जोड़ा था, उसी सोच से अब कर व्यवस्था, राशन, पेंशन, संविधान, परीक्षा और शोध तक जैसी दर्जनों पहल "एक देश-एक व्यवस्था" का आधार स्तंभ बन गई है।

इस 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर देश सरदार पटेल की 150वीं जयंती का दो वर्षीय राष्ट्रीय उत्सव मना रहा है। ऐसे में आइए जानते हैं कि कैसे सांस्कृतिक एकता का 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' मंत्र बन गया है नीति-निर्माण और नागरिकों की जीवन की सुगमता का आधार...

एक राष्ट्र, एक राशन कार्ड योजना से जुड़े उत्तर प्रदेश के लाभार्थी वृंदावन चौरसिया के परिवार में पांच लोग हैं। वह बताते हैं कि पांच सदस्य का मेरे पास राशन कार्ड है और सीधे उचित मूल्य की दुकान से अटैच है। मुझे हर महीने राशन मिल रहा है। मैं एक राष्ट्र, एक राशन कार्ड का लाभार्थी हूं। इससे मैं देश में कहीं भी उचित मूल्य की दुकान से राशन प्राप्त कर सकता हूं। इसके लिए मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभारी हूं। एक देश, एक राशन कार्ड के एक अन्य लाभार्थी कृष्ण कुमार मौर्य बताते हैं कि उनका पांच यूनिट का कार्ड है। हर महीने चावल और गेहूं मिलता है। किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं आती है। वह कहते हैं कि एक देश, एक राशन कार्ड से मुझे देश के किसी भी हिस्से में यह अनाज मिल सकता है। यह सुविधा प्रदान करने के लिए वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं। प्रवासी मजूदरों के लिए यह एक वरदान से कम नहीं है। यह उनके लिए जीवनदायिनी साबित हो रही है। अब हर राशनकार्ड धारक देश में कहीं भी और किसी भी उचित मूल्य के राशन दुकान से राशन प्राप्त कर सकते हैं।

यह बदलाव 'एक देश-एक राशन कार्ड' (वन नेशन-वन राशन कार्ड) योजना से आया, जिसे खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत सभी नागरिकों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 2019 में शुरू किया गया। इस योजना का पूरा विचार मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी जैसा ही है। जैसे नंबर बदले बिना ऑपरेटर बदला जा सकता है, वैसे ही अब लाभार्थी बिना नया कार्ड बनवाए, देश में कहीं से भी अपने कोटे का राशन ले सकता है। सभी राशन कार्ड को आधार से जोड़ने और उचित मूल्य की दुकानों पर इलेक्ट्रॉनिक प्वाइंट ऑफ सेल मशीनें लगाने से यह पोर्टेबिलिटी संभव हो पाई। यह योजना विशेष रूप से उन करोड़ों प्रवासी मजदूरों के लिए बनाई गई, जो आजीविका की तलाश में दूसरे राज्य चले जाते हैं। अब उनका अधिकार किसी भी राज्य में मूल राज्य की तरह ही मिल जाता है।

वृंदावन चौरसिया और कृष्ण कुमार मौर्य जैसे लाखों प्रवासी मजदूर और छोटे कामगार हैं, जिनके लिए यह छोटी-सी तकनीकी सुविधा, दरअसल गरिमा और भरोसे का सवाल है। यह उस बड़ी तस्वीर का एक टुकड़ा भर है, जिसमें भारत ने बीते एक दशक से अधिक समय में अपनी बिखरी व्यवस्थाओं को, एक-एक कर, एक सूत्र में पिरोना शुरू कर दिया है।

राज्य अनेक राष्ट्र एक,
पंथ अनेक लक्ष्य एक,
बोली अनेक स्वर एक,
भाषा अनेक भाव एक,
रंग अनेक तिरंगा एक,
समाज अनेक भारत एक,
रिवाज अनेक संस्कार एक,
कार्य अनेक संकल्प एक,
राह अनेक मंजिल एक,
चेहरे अनेक मुस्कान एक।
इसी एकता के मंत्र के
साथ देश आगे बढ़े।

महात्मा गांधी कहा करते थे, "विविधता में एकता को जीने के हमारे सामर्थ्य की निरंतर परीक्षा होगी। इस परीक्षा को हमें हर हाल में पास करते रहना है"। बीते 12 साल में भारत ने विविधता में एकता को जीने के हर प्रयास में सफलता पाई है। सरकार ने अपनी नीतियों और निर्णयों में एक भारत की भावना को लगातार मजबूत किया है। आज वन नेशन-वन आइडेंटिटी (आधार), वन नेशन-वन टैक्स (जीएसटी), वन नेशन-वन पॉवर ग्रिड, वन नेशन-वन राशन कार्ड, वन नेशन-वन हेल्थ इंश्योरेंस जैसी एकीकृत व्यवस्था ने देश को एक सूत्र में जोड़ दिया है। अब देश वन नेशन-वन इलेक्शन की दिशा में काम कर रहा है, जो भारत के लोकतंत्र को नई मजबूती देगा। भारत आज वन नेशन-वन सिविल कोड...यानी सेक्यूलर सिविल कोड की तरफ भी बढ़ रहा है। इसका एलान स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से भी किया था। इसके मूल में भी सामाजिक एकता है जो सरदार पटेल की ही प्रेरणा है। इससे अलग-अलग सामाजिक वर्गों में भेदभाव की जो शिकायत रहती है, उसे दूर करने में मदद मिलेगी, देश की एकता और मजबूत होगी।

एक भावना जो बन गई जनकल्याण की नीति

इस पूरी यात्रा की नींव 31 अक्टूबर 2015 को पड़ी। सरदार पटेल, जिन्होंने आजादी के बाद करीब साढ़े पांच सौ रियासतों को कूटनीति और दृढ़ता से जोड़कर आज के भारत का नक्शा खींचा था, उन्हीं की जयंती पर प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय एकता दिवस के समारोह में 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की शुरुआत की। इसका मूल उद्देश्य था, राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों, केंद्रीय मंत्रालयों, शिक्षण संस्थानों और आम जनता के बीच भाषा, साहित्य, संस्कृति और परंपरा के सीधे आदान-प्रदान के जरिए एक ऐसी सतत प्रक्रिया बनाना, जो देश की एकता और अखंडता को और मजबूत करे।

> *किसी भी समाज की ताकत उसकी एकता होती है। इसीलिए, मजबूत राष्ट्र के हितैषी एकता की इस भावना की प्रशंसा करते हैं, उसके लिए प्रयास करते हैं। इसलिए, देश की एकता और एकजुटता हम सबका सामूहिक दायित्व है।*
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

शिक्षा मंत्रालय की अगुआई में शुरू हुए इस कार्यक्रम के तहत हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश को किसी दूसरे राज्य से 'जोड़ी' बनाकर सांस्कृतिक भ्रमण, भाषा-शिविर, विद्यार्थी-अध्यापक आदान-प्रदान और उत्सव आयोजित किए जाने लगे। इससे तमिलनाडु का कोई छात्र पंजाब की परंपरा को करीब से देखने लगा तो असम का कोई युवा गुजरात के गरबा में शामिल होकर वहां की मिट्टी की खुशबू महसूस करने लगा। स्कूल-कॉलेजों में निबंध प्रतियोगिताएं, प्रश्नोत्तरी और सांस्कृतिक उत्सव इस पहल का हिस्सा बना, जिससे 'अनेकता में एकता' केवल किताबी पंक्ति न रहकर बच्चों के अनुभव का हिस्सा बनी। आगे चलकर इस पहल में कई और आयाम भी जुड़ते गए। पर्यटन पर्व के दौरान देश के अलग-अलग हिस्सों में स्थानीय संस्कृति और शिल्प को बढ़ावा देना, विश्वविद्यालयों में 'मातृभाषा गौरव' जैसे आयोजन और सरकारी कार्यक्रमों में अलग-अलग भाषाओं व बोलियों को जगह देना। इस सबका उद्देश्य यही था कि एकता किसी एक भाषा या संस्कृति को थोपने से नहीं, बल्कि विविधता को गले लगाकर आती है, जैसे सरदार पटेल ने स्वयं अलग-अलग रियासतों की पहचान बरकरार रखते हुए उन्हें एक झंडे तले जोड़ा था।

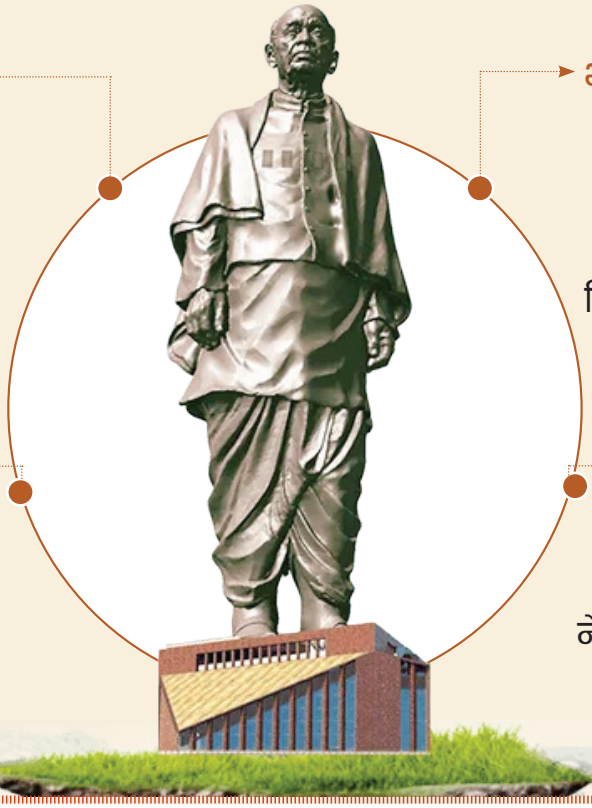
लेकिन जो शुरुआत एक सांस्कृतिक प्रयोग के तौर पर हुई थी, वह धीरे-धीरे एक व्यापक दर्शन में बदल गई। यह सोच कि अगर भारतीय होने का मतलब एक साझा पहचान है, तो शासन की बुनियादी व्यवस्थाएं भी हर नागरिक के लिए एक जैसी होनी चाहिए, चाहे वह जिस राज्य, भाषा या पृष्ठभूमि से आता हो। इसी का परिणाम हुआ कि अगले कुछ वर्षों में यही सोच, एक के बाद एक, बड़े ढांचागत सुधारों में बदलने लगी।



भारत की एकता
के चार आधार स्तंभ

सांस्कृतिक एकता
भारत की हजारों वर्षों की सांस्कृतिक परंपराएं, तीर्थ, उत्सव, योग और सांस्कृतिक आदान-प्रदान देश को जोड़ने वाली ऊर्जा हैं।

भाषाई एकता
सैकड़ों भाषाओं और बोलियों को भारत की विविधता की ताकत मानते हुए सभी भारतीय भाषाओं को सम्मान और प्रोत्साहन देना।



भेदभाव-मुक्त विकास- गरीबी, असमानता और भेदभाव को सामाजिक एकता की कमजोरी मानते हुए हर नागरिक तक विकास और बुनियादी सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित करना।

कनेक्टिविटी से दिलों का कनेक्शन- सड़क, रेल, हाईवे, हवाई संपर्क और डिजिटल नेटवर्क के जरिए भौगोलिक दूरी कम करना और लोगों के बीच संपर्क बढ़ाना।

विकास और विश्वास की एकता 'एक भारत' का आधार

बीते 12 वर्षों में सरदार पटेल के सपनों को साकार करते हुए केंद्र सरकार ने एक ऐसी एकीकृत व्यवस्था का आधार तैयार कर दिया है, जहां सभी नागरिक राज्य की सीमाओं से परे, राष्ट्रीयता के भाव से जुड़ रहे हैं। यह भारत के प्रति, सरदार पटेल के असाधारण योगदान के प्रति देशवासियों की कार्यांजलि है। उनके विजन ने यह सिखाया है कि असंभव से दिखने वाले काम को भी संभव बनाया जा सकता है। जब भारत को आजादी मिली थी, तो दुनिया में कुछ लोग थे, जो भारत के बिखरने का आकलन कर रहे थे। उन लोगों को जरा भी उम्मीद नहीं थी कि सैकड़ों रियासतों को एकजुट करके, फिर से एक भारत का निर्माण हो पाएगा। लेकिन सरदार पटेल ने यह करके दिखाया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में, यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि सरदार पटेल व्यवहार में यथार्थवादी...संकल्प में सत्यवादी...कार्य में मानवतावादी... और ध्येय में राष्ट्रवादी थे।

आज भारत जब भाषाओं की बात करता है तो उसमें भी एकता की एक मजबूत कड़ी होती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं में पढ़ाई पर विशेष बल दिया गया है। केंद्र सरकार ने मराठी भाषा, बांग्ला भाषा, असमिया भाषा, पाली भाषा और प्राकृत भाषा, इन भाषाओं को शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा दिया है। भाषा की तरह ही आज देश भर में चल रहे कनेक्टिविटी के काम भी देश की एकता को मजबूत कर रहे हैं। रेल हो, रोड हो, हाईवे हो या इंटरनेट, इन आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर ने गांव को शहरों से जोड़ा है। जब कश्मीर और नॉर्थ ईस्ट की राजधानियां रेल से जुड़ती हैं...जब लक्षद्वीप और अंडमान-निकोबार द्वीप अंडर-सी केबल और तेज इंटरनेट से जुड़ते हैं...जब पहाड़ों पर लोग मोबाइल नेटवर्क से जुड़ते हैं...तब विकास की दौड़ में पीछे छूट जाने का भाव समाप्त हो जाता है। सबका साथ, सबका विकास अब सुशासन का मंत्र बन चुका है। विकास और विश्वास की यही एकता, एक भारत-श्रेष्ठ भारत के निर्माण को गति देती है।

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष
आवरण कथा

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

संस्कृति से राष्ट्रीय एकीकरण तक

शुरूआत: 31 अक्टूबर 2015

- सरदार वल्लभभाई पटेल की 140वीं जयंती यानी राष्ट्रीय एकता दिवस पर शुरू हुई इस पहल का मूल उद्देश्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच भाषा, साहित्य, संस्कृति और परंपराओं का आदान-प्रदान बढ़ाना था।
- राज्यों की जोड़ियां बनाकर सांस्कृतिक यात्राएं, भाषा शिविर, विद्यार्थी-अध्यापक आदान-प्रदान, उत्सव, प्रश्नोत्तरी और निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विचार था कि देश के एक हिस्से का नागरिक दूसरे हिस्से को केवल नक्शे पर नहीं, अनुभव के जरिए जाने।
- समय के साथ यह पहल एक व्यापक दर्शन में बदलती गई। विविधता को बनाए रखते हुए एकता को मजबूत करने की सोच ने आगे चलकर व्यवस्थाओं के एकीकरण की जमीन तैयार की।
- भाषाई एकता के लिए भारतीय भाषाओं में शिक्षा और भाषा-संवर्धन।
- सौराष्ट्र तमिल संगमम् और काशी तमिल संगमम् जैसे सांस्कृतिक आयोजन।
- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के जरिए सांस्कृतिक जुड़ाव।

काशी-तमिल संगमम्

वर्ष 2022 में पीएम मोदी द्वारा उद्घाटन किए गए काशी तमिल संगमम् (केटीएस) ने सांस्कृतिक सेतु की नींव रखी, जो अभी तक हुए चार संस्करणों में और मजबूत होता रहा है। यह तमिलनाडु-काशी के बीच एक सांस्कृतिक और शैक्षिक सहभागिता के रूप में विकसित हुआ है।

- केटीएस 1.0 में व्यापक सांस्कृतिक अनुभव। केटीएस 2.0 में विस्तारित जनभागीदारी और विषयगत सहभागिता। केटीएस 3.0 ज्ञान-केंद्रित। केटीएस 4.0 के साथ , संगम तमिल भाषा सीखने को सर्वोपरि रखा गया।

सौराष्ट्र तमिल संगमम्: सौराष्ट्र तमिल संगमम् का आयोजन 2023 में किया गया। सौराष्ट्र तमिल संगमम्, गुजरात और तमिलनाडु के बीच साझा संस्कृति व विरासत का उत्सव बना। इस 10 दिवसीय उत्सव में 3,000 से अधिक सौराष्ट्र के तमिल निवासियों ने हिस्सा लिया।



युवा संगम: इसका 7वां चरण अब चल रहा है जिसमें युवाओं को शैक्षिक यात्राओं का अवसर मिलता है।

भाषा संगम: इस एप का उद्देश्य देशवासियों को विभिन्न भारतीय भाषाओं से परिचित कराना और सीखने का अवसर देना है।

चार स्तंभों पर भारत की एकता का अनुष्ठान

विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए, एकता सर्वोपरि आधार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं इस एकता के लिए चार महत्वपूर्ण अनुष्ठान निर्धारित किए हैं, जिन पर देश निरंतर काम कर रहा है।

एकता का पहला स्तंभ है- सांस्कृतिक एकता। यह भारत की संस्कृति ही है, जिसने हजारों वर्षों से राजनीतिक हालातों

एक राष्ट्र, एक समय

विदेशी उपग्रह-आधारित समय स्रोतों पर निर्भरता होगी कम

27 अगस्त 2026 को उपभोक्ता मामले विभाग ने विधिक मापविज्ञान (भारतीय मानक समय) नियम, 2026 अधिसूचित किए। नियम राजपत्र में प्रकाशन के 180 दिन बाद लागू होंगे। पूरे देश में कानूनी, प्रशासनिक, व्यावसायिक और आधिकारिक उद्देश्यों के लिए भारतीय मानक समय (**IST**) को समान समय-संदर्भ बनाया जाएगा।

- 'एक राष्ट्र, एक समय' के इस पहल से भारतीय समय प्रसार बुनियादी ढांचे से विदेशी उपग्रह-आधारित समय स्रोतों पर निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी।
- साझा समय-संदर्भ से बैंकिंग व डिजिटल भुगतान की सटीक टाइम-स्टैम्पिंग संभव होगी।
- रेलवे, हवाई अड्डों, दूरसंचार, इंटरनेट और विद्युत प्रणालियों के बेहतर समन्वय में मदद मिलेगी।
- सरकारी-कानूनी रिकॉर्ड तथा आपातकालीन और अन्य समय-संवेदनशील सेवाओं के समन्वय में भी सुधार होगा।



> *काशी तमिल संगमम् और सौराष्ट्र तमिल संगम पहल सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक जीवंत मंच बन गई है। यह भारत की विविधता में एकता का महोत्सव मनाते हुए परंपराओं, भाषाओं और समुदायों को जोड़ती है।*
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

से अलग भारत को एक राष्ट्र के रूप में अमर रखा है। द्वादश ज्योतिर्लिंग, सात पुरियां, चार धाम, 50 से अधिक शक्तिपीठ, तीर्थ यात्राओं की परंपरा, यह वो प्राण ऊर्जा है, जो भारत को एक चैतन्य राष्ट्र बनाती है। इसी परंपरा को, आज सौराष्ट्र तमिल संगमम् और काशी तमिल संगमम् जैसे आयोजनों के जरिए आगे बढ़ाया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के जरिए भारत के महान योग विज्ञान को भी नई पहचान मिल रही है। भारत का योग आज लोगों को जोड़ने का माध्यम बन रहा है।

एकता का दूसरा स्तंभ है- भाषाई एकता। भारत की सैकड़ों भाषाएं और बोलियां, यह भारत की खुली और रचनात्मक सोच का प्रतीक हैं। यहां किसी समाज ने, सत्ता ने या संप्रदाय ने कभी भी भाषा को अपना हथियार नहीं बनाया। एक भाषा को थोपने का प्रयास नहीं हुआ। तभी भारत भाषाई विविधता की दृष्टि से विश्व का इतना समृद्ध राष्ट्र बना है। भारतीय भाषाओं ने संगीत के अलग-अलग सुरों की तरह राष्ट्र की पहचान को सशक्त बनाया है। यही कारण है कि वर्तमान सरकार हर भाषा को राष्ट्रीय भाषा मानती है। भारत के पास तमिल जैसी दुनिया की सबसे पुरानी भाषा है, संस्कृत जैसी ज्ञान की धरोहर है। आज हर भारतीय भाषा को प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि भारत का हर बच्चा अपनी मातृभाषा में पढ़ाई कर सके। यह भी प्रयास है कि भारत के लोग देश की दूसरी भाषाओं को भी जानें, उनसे सीखें और भाषाएं राष्ट्र की एकता का सूत्रधार बनें।

एकता का तीसरा स्तंभ है- भेदभाव मुक्त विकास। गरीबी और भेदभाव ही सामाजिक तानेबाने की सबसे बड़ी कमजोरी होती है। आक्रांताओं ने हमेशा इन कमजोरियों का इस्तेमाल

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष
आवरण कथा

एक भारत, श्रेष्ठ भारत की मजबूती के सूत्र



खाद्य उत्सव - खाद्य परंपरा : अपने-अपने जोड़ीदार राज्यों के साथ संबंधित राज्य के खान-पान का आदान-प्रदान करने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन... भागीदारी जोड़ीदार राज्यों के खान-पान का स्वाद ले सकें और उनके प्रमुख व्यंजनों को जान सकें।

संस्कृति का आदान-प्रदान: भारत की संस्कृति एवं त्योहारों को जानने के लिए इस थीम के तहत अलग-अलग राज्यों के त्योहार किस तरह से मनाए जाते हैं, उसका महत्व क्या है, इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। राज्य के घरेलू नुस्खों का प्रदर्शन भी किया जाता है।

युवा महोत्सव: राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के चुने हुए संस्थान युवा महोत्सव आयोजित करते हैं। अपने राज्य व जोड़ीदार राज्य के सभी विश्वविद्यालय और कॉलेजों को आमंत्रित करते हैं।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत क्लब: देशभर के शैक्षणिक संस्थानों में एक भारत, श्रेष्ठ भारत क्लब बने हुए हैं। ये क्लब अभियान संदेश का प्रसार करते हैं। क्लब हर महीने एक भारत, श्रेष्ठ भारत दिवस मनाते हैं।

शैक्षिक आदान-प्रदान: इसके तहत शैक्षणिक संस्थान आपस में संबंधित विषयों पर बातचीत करते हैं। सेमिनार, वेबिनार आयोजित करने के अलावा जोड़ीदार राज्यों के संस्थान का दौरा भी करते हैं।

खेलों का आयोजन: एक भारत, श्रेष्ठ भारत के तहत खेल गतिविधियों आयोजित की जाती हैं जिनमें टीम खेलों पर फोकस रहता है ताकि युवाओं में टीम भावना विकसित हो। पारंपरिक खेलों को प्राथमिकता दी जाती है।

किया है। इसलिए सरदार पटेल गरीबी के खिलाफ देश के लिए दीर्घकालिक योजना पर काम करना चाहते थे। उन्होंने एक बार कहा था कि अगर भारत को आजादी 1947 के बजाय उससे भी 10 साल पहले मिल गई होती, तो 1947 तक भारत खाद्यान्न की कमी के संकट से मुक्त हो चुका होता। केंद्र सरकार आज सरदार पटेल के इन अधूरे संकल्पों को भी पूरा करने में लगी है। बीते

पर्यटन आदान-प्रदान: इसका उद्देश्य जोड़ीदार राज्यों के प्रमुख पर्यटन स्थलों और आकर्षणों के बारे में जानकारी प्राप्त करना और उन्हें समझना है। इनमें स्मारकों और पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी का प्रसार, टूर ऑपरेटर के लिए रोड शो, होमस्टे को बढ़ावा देना शामिल हैं।

किताबों का अनुवाद: इसमें जोड़ीदार राज्यों की किताब, पर्यटन ब्रॉसर का अनुवाद किया जाता है ताकि जोड़ीदार राज्यों के साहित्य व अन्य जानकारी को समझ सकें।

जोड़ीदार राज्य की भाषा सीखना: एक भारत श्रेष्ठ भारत का उद्देश्य लोगों को जोड़ीदार राज्यों की भाषाओं से परिचित कराना है, ताकि वे वहां के लोगों से बुनियादी स्तर पर संवाद कर सकें। मातृभाषा के अलावा अन्य भारतीय भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

- समान अर्थ वाली कहावतें सिखाई जाती हैं। गीतों का अनुवाद, रोज एक वाक्य 22 भाषाओं में अनुवाद किया जाता है।

टूर-कैप: जोड़ीदार राज्यों में कैंप, टूर किए जाते हैं।

उत्सव-महोत्सव: उत्सवों का आयोजन किया जाता है जिसमें जोड़ीदार राज्यों को आमंत्रित किया जाता है।



अब हर राज्य से जुड़ा राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

एकता की एक और नई पहल

- **आयोजन स्थल में ऐतिहासिक बदलाव:** अब तक केवल दिल्ली तक सीमित रहे राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार वितरण समारोह को देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों तक ले जाने की नई पहल की गई है।
- **गुजरात के केवड़िया से शुरुआत:** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 22 सितंबर 2026 को गुजरात के केवड़िया स्थित 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' से इसका शुभारंभ किया।
- **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का संदेश:** आधुनिक भारत के निर्माता सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा के समक्ष सिनेमाई उत्कृष्टता और विविधता का सम्मान 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को साकार करता है।
- **राज्यों को मेजबानी का आमंत्रण:** सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने राज्यों से अपने प्रमुख पर्यटन स्थलों के साथ आयोजन की मेजबानी के प्रस्ताव भेजने की अपील की है, चयनित राज्य में अगले पुरस्कार समारोह का आयोजन होगा।
- **पर्यटन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा:** कला, संस्कृति और पर्यटन के इस संगम से न केवल क्षेत्रीय विकास और पर्यटन को गति मिलेगी, बल्कि देश भी एकता के सूत्र में बंधेगा।

12 वर्ष में 25 करोड़ देशवासियों को गरीबी से बाहर निकाला गया है। आज करोड़ों गरीब को घर मिल रहा है। घर-घर साफ पानी पहुंच रहा है। मुफ्त इलाज की सुविधा मिल रही है। यानी, हर नागरिक के लिए गरिमा पूर्ण जीवन, यह आज देश का मिशन भी है और विजन भी है। भेदभाव और भ्रष्टाचार मुक्त ये नीतियां आज राष्ट्रीय एकता को मजबूत बना रही हैं।

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष
आवरण कथा

एक देश-एक कर
आर्थिक एकीकरण का नया युग

एक देश-एक कर- जीएसटी

शुरुआत: 1 जुलाई 2017



- वस्तु एवं सेवा कर ने देश की 30 कर और उपकरण को एक कर व्यवस्था में समेटा।
- इसका उद्देश्य कारोबार के लिए अलग-अलग राज्यों की कर सीमाओं से पैदा होने वाली जटिलताओं को कम करना और भारत को एक साझा बाजार की दिशा में ले जाना था। इससे हर राज्य में व्यापार व अन्य कर को समझना आसान हुआ।
- केंद्र और राज्यों को साथ लाने वाली जीएसटी परिषद इस व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी।
- जीएसटी 2.0 यानी अगली पीढ़ी के सुधार के तहत मुख्य रूप से कर दर 5 फीसदी और 18% में बदल दी गई।

जीएसटी पंजीकृत करदाता

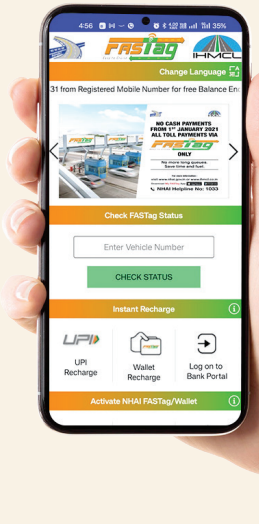
2026 **1.65** करोड़

2017 **66.5** लाख

एकता का सूत्र

नौ वर्षों में, जीएसटी ने भारत के 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत' के दृष्टिकोण को मजबूत किया है। जीएसटी ने 17 अलग-अलग करों और 13 उपकरों को एक सामान्य ढांचे में समाहित कर दिया।

वन नेशन, वन FASTag



शुरुआत- टोल संग्रह को इलेक्ट्रॉनिक रूप से एकीकृत करने के लिए 2019 में शुरू किया गया। फरवरी, 2021 में राष्ट्रीय राजमार्ग के सभी शुल्क प्लाजा लेन को फास्टैग लेन घोषित कर दिया गया।

- देशभर के राजमार्गों पर यात्रा बाधा रहित और तीव्र हुई है, टोल प्लाजा पर कतार घटी, ईंधन की बचत हुई।
- 3,075 रुपये में प्राइवेट कार, जीप और वैन के लिए सालाना पास की सुविधा 15 अगस्त, 2025 को शुरू। यह पास एक साल या 200 बार टोल प्लाजा से गुजरने तक मान्य है।
- अब '**OneTag**' की शुरुआत की गई जिसमें फास्टैग पोर्टिबिलिटी की सुविधा है। इसमें वाहन पर लगे मौजूदा फास्टैग को बरकरार रखते हुए जारीकर्ता बदल सकते हैं। **FASTag** उपयोगकर्ताओं को अधिक सुविधा और विकल्प मिलेंगे।

98%

से अधिक उपयोग और करीब 13 करोड़ यूजर्स के साथ **FASTag** ने देश में इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली को बदल दिया है।



एकता का सूत्र

देशभर में एक ही फास्टैग से टोल का भुगतान कर सकते हैं। कई जगह पार्किंग में इसी से भुगतान। अलग-अलग राज्यों में शुल्क देने की मजबूरी खत्म, शुल्क में सबसे समान व्यवहार।

राष्ट्रीय एकता का चौथा स्तंभ है- कनेक्टिविटी से दिलों का कनेक्शन। आज देश में रिकॉर्ड हाईवे और एक्सप्रेसवे बन रहे हैं। वंदे भारत और नमो भारत जैसी ट्रेनें, भारतीय रेल में परिवर्तनकारी सुधार कर रही है। छोटे शहर भी अब एयरपोर्ट की सुविधा से जुड़ रहे हैं। इस आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से भारत को लेकर दुनिया का नजरिया ही पूरी तरह बदल रहा है। इसने उत्तर

> *एकता की कमी जहां नए संकट लाती है, सबका सामूहिक प्रयास देश को नई ऊंचाई पर लेकर जाता है। आजाद भारत के निर्माण में सबका प्रयास जितना तब प्रासंगिक था, उससे कहीं अधिक आजादी के इस अमृतकाल में होने वाला है।*
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**



से दक्षिण, पूरब से पश्चिम, देश की दूरियों को भी कम किया है। पीपुल टू पीपुल कनेक्ट और सांस्कृतिक आदान-प्रदान, इसी का एक नया दौर है जो राष्ट्रीय एकता को बल दे रहा है। भारत में बीते 12 वर्ष में जो डिजिटल क्रांति आई है, उसने इस एकता को नई मजबूती प्रदान की है।

जब देश ने एक सुर में कारोबार की भाषा बोली

इस बदलाव का सबसे बड़ा और सबसे अधिक चर्चित उदाहरण है वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी)। दशकों तक भारत में हर राज्य की अपनी अलग-अलग कर व्यवस्था थी। एक ट्रक जब एक राज्य की सीमा पार कर दूसरे में दाखिल होता तो चेक-पोस्ट पर घंटों इंतजार करना पड़ता था, अलग-अलग टैक्स स्लैब और कागजी उलझनें आम बात थीं। एक ही सामान की कीमत राज्य बदलते ही बदल जाती थी और व्यापारी को हर राज्य के लिए अलग हिसाब-किताब रखना पड़ता था। छोटे दुकानदार से लेकर बड़े उद्योगपति तक, हर कोई इस उलझी हुई व्यवस्था से जूझता था।

ऐसे में 1 जुलाई 2017 को संविधान के 101वें संशोधन के जरिए यह पूरी तस्वीर बदल गई। 'एक देश-एक कर' के नारे के साथ लागू हुए जीएसटी ने देशभर के दर्जनों अप्रत्यक्ष करों, उत्पाद शुल्क, सेवा कर, वैट, चुंगी आदि को एक ही व्यवस्था में समेट दिया। अब एक ही जीएसटी नंबर, एक ही ऑनलाइन रिटर्न और एक ही कर व्यवस्था के सहारे वे देश के किसी भी कोने में अपना माल भेज सकते हैं। इससे न केवल कारोबार करना आसान हुआ, बल्कि भारत सचमुच एक समान बाजार बन गया। केंद्र और राज्यों को एक साथ बिठाकर फैसले लेने वाली जीएसटी परिषद ने इस बदलाव को 'सहकारी संघवाद' की एक जीवंत मिसाल भी बना दिया, जहां सभी राज्य की आवाज एक मंच पर सुनी जाती है और दरों से लेकर छूट तक हर फैसला आपसी सहमति से होता है।

जब दूर हुई पेंशन की विसंगति बनी समान व्यवस्था

दशकों से देश के पूर्व सैनिक एक मांग उठाते रहे थे, समान रैंक, समान सेवा-अवधि पर समान पेंशन यानी वन रैंक-वन पेंशन (ओआरओपी)। पहले स्थिति यह थी कि जो सैनिक पहले रिटायर हुआ, उसे उसी रैंक पर बरसों बाद रिटायर हुए सैनिक से कम पेंशन मिलती थी, भले ही दोनों ने देश की सीमा पर उतनी ही सेवा और उतना ही जोखिम क्यों न उठाया हो। यह विसंगति दशकों से पूर्व सैनिकों के मन में एक टीस की तरह बनी हुई थी और कई बार

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष
आवरण कथा

सामाजिक कल्याण
सुरक्षा की एकीकृत व्यवस्था

एक देश-एक राशन कार्ड

शुरुआत: 2019

81 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को मुफ्त अनाज उपलब्ध कराया जा रहा है।

- प्रवासी मजदूरों और दूसरे स्थानों पर काम करने वाले लाभार्थियों के लिए राशन की सुविधा को पोर्टेबल बनाने की व्यवस्था।
- अब लाभार्थी नया राशन कार्ड बनवाए बिना देश में दूसरी जगह भी अपने हिस्से का राशन ले सकता है।
- आधार से जुड़ी पहचान और उचित मूल्य की दुकानों पर इलेक्ट्रॉनिक पॉइंट ऑफ सेल मशीनों ने इस पोर्टेबिलिटी को संभव बनाया।



एकता का सूत्र
जहां नागरिक काम करे, वहां उसका खाद्य अधिकार उसके साथ पहुंचे।

वन रैंक, वन पेंशन (OROP)



शुरुआत: 2015

- समान रैंक और समान सेवा-अवधि वाले पूर्व सैनिकों के लिए समान पेंशन की व्यवस्था।
- इसका उद्देश्य अलग-अलग समय पर सेवानिवृत्त हुए समान रैंक के सैनिकों के बीच पेंशन की विसंगति को दूर करना था।
- 25 लाख से अधिक पूर्व सैनिक व उनके परिजनों को मिला लाभ।

एकता का सूत्रः देश की सेवा करने वाले सैनिकों के सम्मान और पेंशन व्यवस्था में समानता का भाव।

'वन नेशन, वन हेल्थ इंश्योरेंस'

(आयुष्मान भारत) की दिशा में ऐतिहासिक कदम

समाज के आर्थिक रूप से कमजोर और वंचित 40% परिवारों को द्वितीयक एवं तृतीयक स्तर के अस्पताल में भर्ती के लिए प्रति वर्ष 5 लाख रुपये प्रति परिवार का निःशुल्क स्वास्थ्य सुरक्षा कवर प्रदान किया जाता है।

- सितंबर 2018 में योजना शुरू होने के बाद से, 22 सितंबर 2026 तक

48.57 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड जारी किए गए हैं।



बड़े आंदोलन भी हुए। 2014 से पहले के समय में पूर्व सैनिकों ने मेडल वापसी जैसा आंदोलन किया।

2014 में जब केंद्र में नई सरकार आई तब 2015 में सरकार ने इस लंबित मांग पर सहमति जताते हुए वन रैंक-वन पेंशन योजना लागू की, जिसका उद्देश्य यही था कि सेवा के वर्षों में अंतर के बावजूद, समान रैंक और समान सेवा-अवधि वाले सभी

13+ करोड़

मरीज अस्पताल में भर्ती। आम लोगों की 2+ लाख करोड़ रुपये से अधिक की बचत हुई।

- 30+ लाख से अधिक मरीजों को दूसरे राज्य के अस्पतालों में इलाज की सुविधा की मिली मंजूरी। जिसकी कुल राशि 8,800 करोड़ रुपये से अधिक है।
- 1.20 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों का आयुष्मान भारत वय वंदना योजना के तहत नामांकन किया गया है।

एकता का सूत्र

स्वस्थ भारत ही विकसित भारत का आधार है। इसके लिए देश के सभी नागरिकों को समान स्वास्थ्य का लाभ मिले।



(आंकड़े 22 सितंबर 2026 तक)



एक देश-एक हेल्थ रिकॉर्ड

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (**NHA**) के माध्यम से 'आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन' (**ABDM**) के तहत 'एक नागरिक, एक डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड' की दिशा में ठोस कार्य किया गया है। इसका उद्देश्य देश के प्रत्येक नागरिक का सुरक्षित, पेपरलेस और एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड तैयार करना है।

प्रमुख उपलब्धियां एवं आंकड़े...

आभा (ABHA) आईडी का निर्माण: प्रत्येक नागरिक को 14 अंकों की विशिष्ट पहचान देने के लिए 96 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाते बनाए जा चुके हैं।

डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड लिंकेज: 110 करोड़ से अधिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड्स (लैब रिपोर्ट, पर्चे, टीकाकरण, अस्पताल डिस्चार्ज समरी आदि) को आभा खाते से लिंक किया गया है।

कंसेंट-आधारित शेयरिंग: इसके जरिए मरीज अपनी सहमति से देश के किसी भी कोने में स्वास्थ्य के पुराने रिकॉर्ड डॉक्टर को दिखा सकते हैं, जिससे अनावश्यक परीक्षण और कागजी फाइलों के झंझट से मुक्ति मिली है।

एकता का सूत्र- अब देश में कहीं भी इलाज कराएं, स्वास्थ्य रिकॉर्ड डिजिटली उपलब्ध होगा। एक क्लिक पर स्वास्थ्य रिकॉर्ड उपलब्ध।

पूर्व सैनिकों को समान पेंशन मिले, चाहे वे किसी भी वर्ष रिटायर हुए हों। किसी सूबेदार ने 1985 में सेवा छोड़ी हो या 2010 में, अब दोनों की पेंशन एक ही पैमाने पर तय होती है। यह विसंगति, जो पीढ़ियों तक सैनिक परिवारों की बातचीत का हिस्सा रही, आखिरकार दूर हुई। देश ने नई एकीकृत व्यवस्था से स्पष्ट संदेश दिया कि अब उनकी सेवा को कभी दो तराजू से नहीं तौला जाएगा।

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष
आवरण कथा

शिक्षा-परीक्षा-भर्ती
युवा सामर्थ्य की एकीकृत शक्ति





एक देश-एक परीक्षा (एनटीए)

शुरुआत: 2017 से, 2026 में बदलाव

- राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी की स्थापना के साथ राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं को एक साझा, तकनीक-आधारित व्यवस्था में संचालित करने की दिशा बनी।
- मेडिकल दाखिले के लिए **NEET** को एकल राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा बनाया गया।
- केंद्र सरकार ने एनटीए सहित अन्य सार्वजनिक परीक्षाओं को सुरक्षित और बेहतर ढंग से कराने के सुझाव देने के लिए नंदन नीलेकणि की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय टास्क फोर्स बनाई है। उच्च स्तरीय कार्य बल ने सभी हितधारकों से सुझाव मांगे हैं।

एकता का सूत्र

विद्यार्थी का अवसर उसके राज्य या बोर्ड की सीमा से आगे, एक राष्ट्रीय परीक्षा मंच पर तय हो।

एक देश-एक भर्ती

केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अगस्त 2020 में स्वीकृत राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी की स्थापना "एक देश, एक भर्ती" की दिशा में एक प्रमुख कदम है।

- **राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी का गठन:** केंद्र सरकार ने विभागों, मंत्रालयों और सार्वजनिक उपक्रमों में अराजपत्रित पदों (ग्रुप बी और सी) पर उम्मीदवारों की प्रारंभिक स्क्रीनिंग के लिए एक स्वायत्त एजेंसी के रूप में राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी की स्थापना को मंजूरी दी।
- **प्रमुख भर्ती एजेंसियों का एकीकरण:** शुरुआती चरण में सीईटी ने तीन प्रमुख भर्ती एजेंसियों-एसएससी, रेलवे भर्ती बोर्ड व बैंकिंग कार्मिक चयन संस्थान की प्रारंभिक परीक्षाओं की जगह ली।

एक देश-एक सब्सक्रिप्शन (ONOS)

हाल ही में हुई शुरुआत

- देश के सरकारी शिक्षण और शोध संस्थानों के विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों को प्रमुख अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं तक राष्ट्रीय सदस्यता के जरिए पहुंच देने की व्यवस्था।
- योजना के लिए तीन वर्ष की अवधि में 6,000 करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान बताया गया है।

एकता का सूत्र

ज्ञान तक पहुंच संस्थान की आर्थिक क्षमता और भौगोलिक स्थिति से सीमित न रहे।



एक देश, एक विधान, एक संविधान

एकीकरण की इस यात्रा का सबसे ऐतिहासिक अध्याय लिखा गया 5 अगस्त 2019 को। दशकों से जम्मू-कश्मीर को अनुच्छेद 370 के तहत एक विशेष संवैधानिक दर्जा प्राप्त था, जिसके चलते भारत के संविधान के कई प्रावधान वहां पूरी तरह लागू नहीं होते थे और न वहां के निवासियों को देश के बाकी हिस्सों जैसे कुछ अधिकार मिलते

संवैधानिक व्यवस्था
शासन का एकीकरण

एक देश-एक संविधान
अनुच्छेद 370 से मुक्ति

निर्णायक बदलाव: 5 अगस्त 2019



- जम्मू-कश्मीर से संबंधित संवैधानिक व्यवस्था में बदलाव के बाद 'एक देश, एक संविधान' की अवधारणा को नया आयाम मिला।
- जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश के रूप में पुनर्गठित किया गया और केंद्र के कानूनों तथा व्यवस्थाओं के लागू होने का ढांचा बदला।

एकता का सूत्र

एक देश, एक विधान, एक संविधान का सपना साकार हुआ। नागरिक अधिकारों और संवैधानिक व्यवस्था को साझा राष्ट्रीय ढांचे से जोड़ा गया।

एक देश-एक चुनाव प्रस्तावित व्यवस्था

विधेयक: दिसंबर 2024

- लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने की अवधारणा।
- सितंबर 2023 में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समिति गठित हुई।
- इसकी सिफारिशों के आधार पर दिसंबर 2024 में संबंधित संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में पेश किया गया।

वर्तमान स्थिति: यह अभी कानून नहीं है। विधेयक संयुक्त संसदीय समिति के विचाराधीन है।

एकता का सूत्र : चुनावी प्रक्रिया को एक चक्र में लाने का प्रस्ताव, ताकि देश में लोकसभा-विधानसभा चुनाव एक साथ हों। चुनाव का खर्च कम हो और बार-बार चुनावी आचार संहिता के कारण विकास के कार्य बाधित न हों।

वन नेशन, वन सिविल कोड

पीएम मोदी ने लाल किले की प्राचीर से कहा था कि जिस सिविल कोड को हम लेकर के जी रहे हैं वो सचमुच में भेदभाव करने वाला सिविल कोड है।

- संविधान की भावना और सुप्रीम कोर्ट भी इसे करने को कहती है। जो संविधान निर्माताओं का सपना था, उस सपने को पूरा करना हम सब का दायित्व है।
- इस गंभीर विषय पर देश में चर्चा हो, व्यापक चर्चा हो। अब समय की मांग है, देश में एक सेक्यूलर सिविल कोड हो, हमें सेक्यूलर सिविल कोड की तरफ जाना होगा।

एकता का सूत्र: जब सेक्यूलर सिविल कोड होगा, तब देश में धर्म के आधार पर जो भेदभाव हो रहें है, सामान्य नागरिकों को दूरी महसूस होती है, उसमें मुक्ति मिलेगी। एकता और एक भारत श्रेष्ठ भारत का भाव बढ़ेगा।

थे। इतना ही नहीं, बाहरी राज्यों के नागरिकों को वहां संपत्ति के वही अधिकार नहीं थे जो बाकी देश में सामान्य बात है। ऐसे में दशकों से बनी स्थायी चुनौती का समाधान करते हुए भारत की संसद ने 5 अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी बनाकर एक देश, एक विधान, एक संविधान की मूल भावना को पुनर्स्थापित किया। इस ऐतिहासिक निर्णय पर सुप्रीम कोर्ट ने भी बाद में मुहर लगाई।

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष
आवरण कथा

सड़क, रेल और इंटरनेट
दूरी से संवाद तक



वन नेशन, वन आइडेंटिटी- आधार

- विश्व की सबसे बड़ी डिजिटल पहचान प्रणाली है जो बायोमेट्रिक और जनसांख्कीय आधार पर डिजिटल पहचान प्रदान करता है।
- यूपीआई, डिजिलॉकर, उमंग एप, ई-हस्ताक्षर सहित देश की तमाम सुविधाएं इस डिजिटल पहचान से जुड़ी हैं।

144 करोड़ से अधिक आधार या वन नेशन, वन आईडेंटिटी जारी की जा चुकी है।

एक देश - एक गैस ग्रिड

- 'एक देश - एक गैस ग्रिड' का उद्देश्य हर घर में एलपीजी और वाहनों के लिए सीएनजी की निर्बाध कनेक्टिविटी उपलब्ध कराना है।
- 2014 से पहले 27 वर्षों में केवल 15 हजार किलोमीटर गैस पाइपलाइन बिछाई गई।
- देश भर में लगभग 34,233 किलोमीटर पाइपलाइन बिछाने के लिए संस्थाओं को अधिकृत किया गया है। इनमें से 25,429 किलोमीटर पाइपलाइन जून 2025 तक चालू हो चुकी है।
- गैस की पहुंच और कनेक्शन बढ़ने से कई राज्य और केंद्र शासित प्रदेश मिट्टी तेल मुक्त हुए।



वन नेशन, वन पावर ग्रिड

- एक देश, एक पावर ग्रिड, एक फ्रीक्वेंसी के तहत फरवरी, 2019 में लेह-लद्दाख को जोड़ने के साथ यह मिशन पूरा हुआ है।
- विश्व का सबसे बड़े पॉवर ग्रिड जो एक फ्रीक्वेंसी पर चलता है। करीब 1.70 लाख सर्किट किलोमीटर लाइन जोड़ी गई।

1.12 लाख मेगावाट बिजली ट्रांसफर की क्षमता विकसित हुई है।

देश के हर हिस्से में पर्याप्त और निरंतर बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित हो रही है। बिजली का नुकसान कम हुआ है।

वन नेशन, वन मोबिलिटी कार्ड

पूरे देश में मेट्रो, बस, कैब, मोनोरेल और सभी अर्बन रेलवे में राष्ट्रीय कॉमन मोबिलिटी कार्ड (एनसीएमसी) जारी किया जा रहा है।

- पीएम मोदी ने मार्च 2019 में ट्रांसपोर्ट मोबिलिटी के लिए वन नेशन, वन कार्ड का शुभारंभ किया। नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड पर आधारित स्वदेशी स्वचालित किराया संग्रह प्रणाली भारत में इस प्रकार की पहली ऐसी प्रणाली है।
- कस्टमर मेट्रो, बस, उपनगरीय रेलवे, टोल, पार्किंग, स्मार्ट सिटी और खुदरा खरीददारी सहित सभी क्षेत्रों में भुगतान के लिए इस सिंगल कार्ड का उपयोग कर सकता है।

आजादी के 7 दशक बाद, देश में एक देश-एक संविधान का संकल्प भी पूरा हुआ है जो सरदार पटेल की आत्मा को कृतज्ञ राष्ट्र की सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है। पूरे देश में 70 साल तक बाबा साहब अंबेडकर का संविधान लागू नहीं हुआ था। वहां पहली बार विधानसभा चुनाव में बिना भेदभाव के वोट डाले गए। पहली बार जम्मू कश्मीर में मुख्यमंत्री ने आजादी के 75 साल के बाद भारत

कनेक्टिविटी के लिए रेल, सड़क, हाईवे और डिजिटल नेटवर्क

सड़क और हाइवे

63.73 लाख किमी के साथ भारत का सड़क नेटवर्क दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा है।

राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई

2013-14 — **91,287** किमी

मार्च 2026 — **1,46,572** किमी

करीब 61% की वृद्धि।



रेल सेवा

- भारतीय रेल ने अगस्त 2026 में 67.27 करोड़ यात्रियों को यात्रा कराई।
- भारत का कुल ब्रॉड गेज रेलवे नेटवर्क का 99.6 प्रतिशत विद्युतीकृत हो चुका है।
- जुलाई 2026 में देश की पहली स्वदेशी हाइड्रोजन फ्यूल सेल ट्रेन शुरू हुई।
- मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर (508 किमी) परियोजना पूर्ण होने वाली है। इसकी डिजाइन स्पीड 350 किमी प्रति घंटा है।

डिजिटल कनेक्टिविटी

- देश में इंटरनेट सब्सक्राइबर बढ़कर 109.2 करोड़ से अधिक हो गए हैं। वायरलेस डेटा की कीमत घटकर 7.51 रुपये प्रति जीबी रह गई है।
- **भारतनेट परियोजना:** देश की ग्राम पंचायतों को जोड़ने के लिए चलाई जा रही इस योजना के तहत 2.21 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को सेवा के लिए तैयार किया गया है।
- **फाइबर और 5जी नेटवर्क** देश भर में लगभग 7 लाख किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाई जा चुकी है और 5जी सेवाएं 99.9% जिलों तक उपलब्ध हैं।



एकता का सूत्र- देश के किसी भी हिस्से में रहते हैं अब हाईवे-एक्सप्रेसवे के साथ ही हाईस्पीड ट्रेन एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति तक पहुंचा रहे हैं। इसी तरह डिजिटल कनेक्टिविटी ने दूरियां कम की हैं। अब गांव भी फाइबर नेटवर्क से जुड़े हैं।

162 वंदे भारत, 2 वंदे भारत स्लीपर और 72 अमृत भारत सेवाओं से कनेक्टिविटी और यात्रा सुविधा बेहतर हुई।



के संविधान की शपथ ली। अब देश के हर हिस्से में, कश्मीर से कन्याकुमारी तक, एक ही संविधान, एक ही कानून व्यवस्था और नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं।

बीते 12 साल में भारत ने ऐसे अनेक मुद्दों का समाधान किया है, जो राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा थे। आज आतंकियों के आकाओं को पता है कि भारत को नुकसान पहुंचाया...तो भारत उन्हें छोड़ेगा

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष
आवरण कथा

किसान सशक्तीकरण
गांव-किसान के लिए एकीकृत व्यवस्था

एक देश-एक ऊर्वरक
भारत ब्रांड से नई शुरुआत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 अक्टूबर 2022 को भारतीय जन उर्वरक परियोजना- 'एक राष्ट्र एक उर्वरक' का शुभारंभ कर भारत यूरिया बैग लॉन्च किया।

- अब देश में बिकने वाला यूरिया एक ही नाम, एक गुणवत्ता और एक ही ब्रांड का होगा और यह ब्रांड 'भारत' है।



एक देश, एक कृषि बाजार

अप्रैल, 2016 में राष्ट्रीय कृषि बाजार यानी eNAM की शुरुआत की गई। eNAM से वन नेशन, वन एग्रीकल्चर मार्केट की दिशा में देश आगे बढ़ रहा है।

- **eNAM** पोर्टल पर 1.80 करोड़ से अधिक किसान और 2.73 लाख व्यापारी पंजीकृत।
- 23 राज्यों और 4 केंद्र शासित पदेशों की 1656 मंडियों को **eNAM** प्लेटफॉर्म से जोड़ा गया।

4.84 लाख करोड़ रुपये से अधिक का लगभग 205 लाख मीट्रिक टन कृषि उपज का व्यापार **eNAM** की शुरुआत से मार्च, 2026 तक हुआ।



नहीं। पूर्वोत्तर की शांति-समृद्धि की राह में कितने बड़े संकट थे। लेकिन संवाद से...विकास और विश्वास से, अलगाव की आग को शांत किया। बोडो समझौते ने असम में 50 सालों का विवाद खत्म किया। ब्रू-रियांग समझौते के कारण हजारों विस्थापित लोग दशकों बाद अपने घर लौटे हैं। नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा से समझौते ने लंबे समय से चल रही अशांति खत्म की है। असम और मेघायल सीमा विवाद को काफी हद तक सुलझाया जा चुका है।

जब 21वीं सदी का इतिहास लिखा जाएगा...तो उसमें एक स्वर्णिम अध्याय होगा कि कैसे भारत ने दूसरे और तीसरे दशक में नक्सलवाद जैसी भयानक बीमारी को जड़ से उखाड़कर दिखाया। एक समय था जब नेपाल के पशुपति से भारत के तिरुपति तक, रेड कॉरिडोर बन चुका था। नक्सलवाद, भारत की एकता और अखंडता के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गया था। आज भारत नक्सल मुक्त हो चुका है।

युवा आकांक्षाओं को एक व्यवस्था का आधार

देश के किसी भी कोने में जन्मा बच्चा डॉक्टर या इंजीनियर बनने का सपना देखता है लेकिन कुछ साल पहले तक यह सपना इस बात पर भी निर्भर करता था कि वह किस राज्य के बोर्ड से पढ़ा है या किस-किस राज्य का प्रवेश परीक्षा फॉर्म भर पाया। मेडिकल प्रवेश के लिए दर्जनों राज्यस्तरीय और निजी परीक्षाएं होती थीं, जिनकी वजह से छात्रों को कई फॉर्म भरने पड़ते, कई शहरों की यात्रा करनी पड़ती, अलग-अलग फीस चुकानी पड़ती और परीक्षा का स्तर भी हर जगह अलग होता। एक गरीब परिवार के लिए तो यह पूरी प्रक्रिया ही किसी दुर्गम पहाड़ जैसी लगती थी।

इस उलझन को खत्म करने के लिए 2017 में राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) की स्थापना की गई, जिसने नीट (NEET) को मेडिकल शिक्षा में दाखिले की एकल राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा

बना दिया, वहीं जेईई जैसी अन्य बड़ी परीक्षाओं का भी केंद्रीकृत, पारदर्शी और तकनीक-आधारित संचालन शुरू हुआ। अब ओडिशा के किसी सरकारी स्कूल का छात्र हो या दिल्ली के किसी नामी निजी स्कूल का, दोनों एक जैसी परीक्षा, एक जैसे प्रश्नपत्र और एक जैसे मूल्यांकन के आधार पर अपनी मेरिट तय करवाते हैं। एकता की यह सोच सिर्फ स्कूल-कॉलेज तक नहीं, शोध और अनुसंधान की दुनिया तक भी पहुंची है। देश की सरकारी शिक्षण-शोध संस्थाओं के छात्र, शिक्षक और शोधार्थी अक्सर महंगी अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं की सब्सक्रिप्शन फीस की वजह से नवीनतम शोध से वंचित रह जाते थे। इसका समाधान बनकर आया है- वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन (ONOS) योजना।

यह बदलाव पूरी तरह चुनौतियों से मुक्त नहीं रहा। किसी भी बड़े राष्ट्रीय बदलाव की तरह इसे भी बेहतर बनाने का काम लगातार जारी है। लेकिन 'एक देश-एक परीक्षा', एक देश-एक भर्ती की मूल भावना ने शिक्षा में समान अवसर की एक मजबूत नींव जरूर रखी है।

> *आज हर हिंदुस्तानी कह सकता है कि वन नेशन, वन विधान। हम सरदार साहब के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के सपने को चरितार्थ करने में लगे हुए हैं। हम ऐसी व्यवस्थाओं को विकसित करें जो देश की एकता को बल दें। यह प्रक्रिया निरंतर चलनी चाहिए।*
>
> **-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

आगे की राहः एक देश, एक चुनाव

एकीकरण की यह यात्रा अभी थमी नहीं है। देश में हर साल किसी न किसी राज्य में चुनाव होते रहते हैं, जिससे प्रशासनिक मशीनरी और आदर्श आचार संहिता का असर लगभग हर समय बना रहता है और इससे कई बार विकास कार्यों और नीतिगत फैसलों की रफ्तार पर भी असर पड़ता है। इसी समस्या के समाधान के लिए 'एक देश, एक चुनाव' यानी लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने के विचार पर लंबे समय से चर्चा चल रही है, ताकि बार-बार होने वाले चुनावी चक्र से प्रशासन और संसाधनों पर पड़ने वाला बोझ कम हो सके।

बार-बार होने वाले चुनावों से न सिर्फ सरकारी खजाने पर भारी बोझ पड़ता है, बल्कि सुरक्षा बलों और प्रशासनिक अमले को भी बार-बार चुनावी ड्यूटी में लगना पड़ता है, जिसका असर विकास कार्यों की निरंतरता पर पड़ता है। एक साथ चुनाव होने से यह चक्र टूटेगा और सरकारें अपने पूरे कार्यकाल में स्थिर नीति-निर्माण पर ध्यान दे सकेंगी।

इस दिशा में सितंबर 2023 में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति गठित की गई, जिसने व्यापक जन-परामर्श और विशेषज्ञों से चर्चा के बाद अपनी सिफारिशें सरकार को सौंपीं। इसी सिलसिले में 17 दिसंबर 2024 को केंद्र सरकार ने लोकसभा में संविधान (129वां संशोधन) विधेयक और केंद्र शासित प्रदेश कानून (संशोधन) विधेयक पेश किया। फिलहाल यह विधेयक विस्तृत विचार-विमर्श के लिए संसद की संयुक्त समिति (जेपीसी) के पास है। इस पर आगे संसद में और चर्चा होनी बाकी है।

एकता का बढ़ता दायरा

हमारे यहां कहा भी गया है- *ऐक्यं बलं समाजस्य तद्भावे स दुर्बलः। तस्मात् ऐक्यं प्रशंसन्ति दृढं राष्ट्र हितैषिणः॥* अर्थात्, किसी भी समाज की ताकत उसकी एकता होती है। इसलिए, मजबूत राष्ट्र के हितैषी एकता की इस भावना की प्रशंसा करते हैं, उसके लिए प्रयास करते हैं। इसलिए, देश की एकता और एकजुटता हम सबका सामूहिक दायित्व है। सरदार पटेल मानते थे कि इतिहास लिखने में समय नहीं गंवाना चाहिए, हमें तो इतिहास बनाने के लिए मेहनत करनी चाहिए।

निश्चित रूप से इसी सोच के साथ जब 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की शुरुआत की थी, तब शायद कुछ लोगों के लिए यह केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भर था। लेकिन बीते एक दशक से अधिक समय में यह भावना कर व्यवस्था, राशन की थाली, सैनिक के सम्मान, संविधान की समानता, परीक्षा के अवसर और ज्ञान तक पहुंच बनाते हुए सभी क्षेत्र में गहराई से उतर आई है। यह यात्रा निरंतर जारी है, जिसके मूल में नागरिकों को देश में कहीं भी एक समान व्यवस्था सुनिश्चित करना है। ■



केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय

रबी फसलों के एमएसपी में बढ़ोतरी, ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर फेज-III योजना को मंजूरी

केंद्र सरकार किसान कल्याण और नवीकरणीय ऊर्जा तक पहुंच बढ़ाने के लिए कृत संकल्पित है जिसके लिए देश निरंतर काम कर रहा है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में 30 सितंबर को हुए केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी के प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। वहीं, ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर फेज-III योजना सहित इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम लागू करने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी गई। इससे किसानों और पर्यावरण की सुरक्षा में मिलेगी मदद...

निर्णय : आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने विपणन सत्र 2027-28 के लिए सभी अधिसूचित रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी को मंजूरी दी।

प्रभाव : एमएसपी में सबसे अधिक वृद्धि कुसुम के लिए घोषित की गई है, जो 675 रुपये प्रति क्विंटल है। इसके बाद रेपसीड और सरसों के लिए 413 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि हुई है। मसूर, जौ, चना और गेहूं के लिए क्रमशः 390 रुपये प्रति क्विंटल, 136 रुपये प्रति क्विंटल, 83 रुपये प्रति क्विंटल और 25 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है।

- 2014-15 से 2025-26 के दौरान गेहूं की खरीद 3715 लाख मीट्रिक टन तक बढ़ गई है।
- इसी प्रकार, 2014-15 से 2025-26 के दौरान रबी की छह फसलों की खरीद 3921 लाख मीट्रिक टन तक बढ़ गई है।
- वर्ष 2014-15 से 2025-26 के दौरान गेहूं उत्पादक किसानों को भुगतान किया गया एमएसपी बढ़कर 7.31 लाख करोड़ रुपये हो गया है।

- वर्ष 2014-15 से 2025-26 के दौरान रबी की छह फसलों के उत्पादक किसानों को भुगतान किया गया एमएसपी बढ़ाकर कर 8.36 लाख करोड़ रुपये किया गया है।

निर्णय : बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम के साथ इंट्रा-स्टेट ट्रांसमिशन सिस्टम के विकास के लिए ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर फेज-III योजना को मंजूरी।

प्रभाव : यह ऐतिहासिक पहल भारत के इंट्रा-स्टेट ट्रांसमिशन सिस्टम को मजबूत करेगी, जिससे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 135 गीगावाट तक की रिन्यूएबल एनर्जी को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना संभव हो सकेगा।

- यह योजना वित्तीय वर्ष 2032-33 तक स्थापित किए जाने का लक्ष्य है, जिसकी कुल परियोजना लागत 1,86,405 करोड़ रुपये है।
- यह योजना 2035 तक 900 गीगावाट स्थापित गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता के लक्ष्य को हासिल करने में मदद करेगी।
- यह योजना देश की दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा में भी योगदान देगी और कार्बन फुटप्रिंट को कम करके पर्यावरण के अनुकूल विकास को बढ़ावा देगी।
- इससे ऊर्जा क्षेत्र, विनिर्माण और निर्माण उद्योगों में बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होंगे।
- बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम (बीईएसएस) के मैन्युफैक्चरिंग और उसके उपयोग से घरेलू ऊर्जा भंडारण उद्योग में अतिरिक्त रोजगार के अवसर पैदा होंगे।
- इसके अलावा, यह योजना भाग लेने वाले राज्यों में संचालन, रखरखाव और ग्रिड प्रबंधन के क्षेत्र में दीर्घकालिक कुशल रोजगार का सृजन करेगी।



निर्णय : दिल्ली में इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (आईटीएमएस) लागू करने को मंजूरी।

प्रभाव : परियोजना के तहत 42 चिन्हित ट्रैफिक कॉरिडोर को कवर किया जाएगा। एआई के माध्यम से वाहनों की निगरानी की जाएगी।

- इसे 24 महीनों में तीन चरणों में लागू किया जाएगा, जिसके बाद 5 वर्षों तक संचालन और रखरखाव किया जाएगा।
- नई व्यवस्था में ऐसे सिग्नल लगाए जाएंगे जो सड़क पर वाहनों की संख्या और यातायात की स्थिति के अनुसार अपने समय में बदलाव कर सकेंगे।
- एआई की मदद से चोरी और संदिग्ध वाहनों की निगरानी आसान होगी।

कैबिनेट के फैसलों पर प्रेस ब्रीफिंग देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।





51,000 से अधिक नियुक्ति पत्र वितरित

भविष्य के लिए युवाओं को तैयार कर रही है भारत सरकार

भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति, स्किल इंडिया मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना और पीएम सेतु जैसी योजनाओं से न सिर्फ युवाओं को भविष्य के लिए तैयार कर रही है, बल्कि युवा रोजगार भी पा रहे हैं। इसी कड़ी में 19 सितंबर को 51 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार मेला में सरकारी सेवा का नियुक्ति पत्र दिया गया। 20वें रोजगार मेले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आप जिस मुकाम पर पहुंचे हैं, उसमें आपकी मेहनत के साथ-साथ माता-पिता और परिवारजनों की भी है तपस्या...

युवाओं के लिए नए अवसर तभी बनते हैं, जब देश की इकोनॉमी आगे बढ़ती है, जब इनवेस्टमेंट बढ़ता है, नए उद्योग लगते हैं और नए सेक्टर्स का विस्तार होता है। आज भारत तेजी से ग्रो करने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था है। इस वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में भारत की विकास दर 7.8 प्रतिशत रही है। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सरकार का प्रयास है कि प्राइवेट सेक्टर में भी रोजगार के नए अवसर तेजी से बढ़े।

इसी सोच के साथ प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना शुरू की गई है। इस योजना पर करीब एक लाख करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। इस योजना की मदद से करीब दो करोड़ युवाओं को पहली बार वर्कफोर्स का हिस्सा बनने का मौका मिलेगा। पीएम मोदी ने कहा कि सरकार

अब तक 12.75 लाख युवाओं को मिले हैं नियुक्ति पत्र

- यह रोजगार मेला पूरे देश में 45 स्थानों पर आयोजित हुआ।
- नव नियुक्त कर्मचारी भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में शामिल होंगे।
- इनमें राजस्व विभाग, रेल मंत्रालय, गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग, रक्षा मंत्रालय इत्यादि शामिल हैं।
- 20वें रोजगार मेले के साथ ही रोजगार मेलों के माध्यम से विभिन्न विभागों और सरकारी संगठनों में लगभग 12.75 लाख युवाओं को नौकरी मिली है।

iGOT कर्मयोगी प्लेटफॉर्म पर आज एक करोड़ 70 लाख से अधिक सरकारी कर्मचारी जुड़ चुके हैं।

आज आप सभी एक ऐसे समय में भारत सरकार से जुड़े हैं, जब देश एक बहुत बड़े लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है और यह लक्ष्य है - 2047 तक विकसित भारत बनाने का। इसमें युवाओं की बहुत बड़ी भूमिका है।

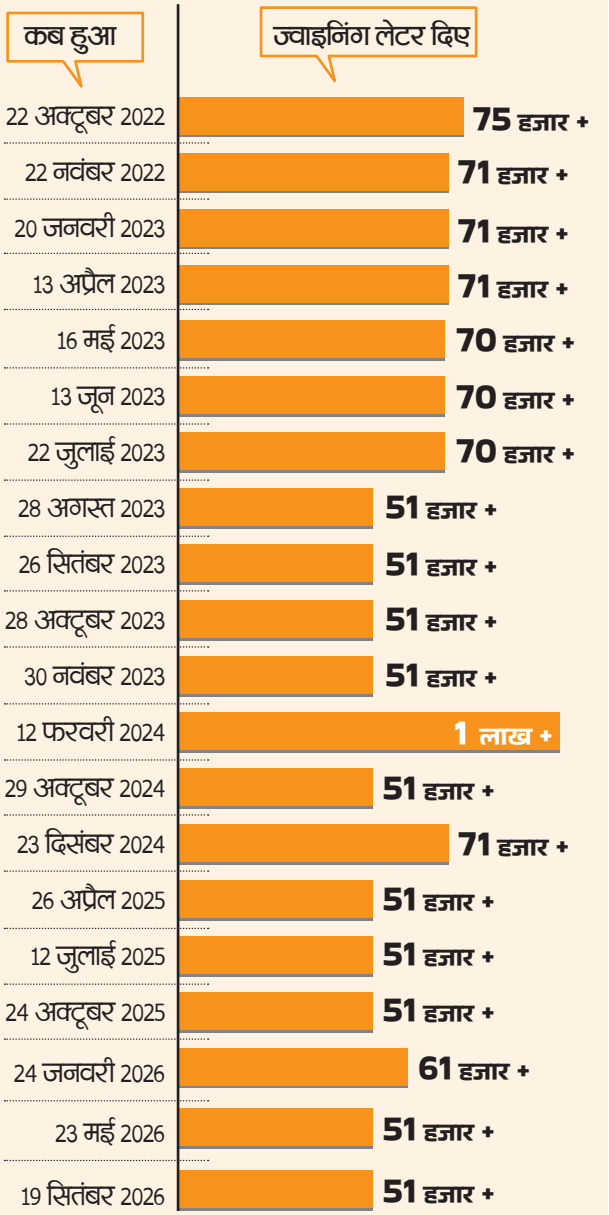
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने पर जोर

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, स्किल इंडिया मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना या अप्रेंटिसशिप को बढ़ावा देने के प्रयास।
- पीएम-सेतु योजना के माध्यम से 60 हजार करोड़ रुपये के निवेश से एक हजार सरकारी **ITIs** को आधुनिक बनाया जा रहा है।

द्वारा इस योजना के तहत पहली बार नौकरी पाने वाले युवाओं को 15 हजार रुपये तक का इनसेंटिव भी दिया जा रहा है। नए रोजगार पैदा करने वाले नियोक्ताओं को भी सरकार प्रोत्साहन दे रही है। यानी देश में रोजगार बढ़ाने के लिए सरकार हर मोर्चे पर काम कर रही है।

युवाओं को सरकारी नौकरी देने के लिए रोजगार मेला







सेमीकंडक्टर का इकोसिस्टम

खोल रहा नवाचार, निवेश और विकास के नए अवसर

मजबूत होती अर्थव्यवस्था और दुनिया के भरोसे के दम पर भारत नया ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब बनने की ओर बढ़ रहा है। इसमें आने वाले समय में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम की बड़ी भूमिका होने वाली है। 17 सितंबर को दिल्ली में आयोजित 'सेमीकॉन इंडिया 2026' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत का सेमीकंडक्टर क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। ऐसे में उन्होंने देश-विदेश के प्रतिभाशाली युवाओं को आधुनिक तकनीक के विकास में साझेदार बनने का किया आह्वान...

सेमीकॉन इंडिया की 2022 में शुरुआत हुई। मोहाली और सूरत में दो नए संयंत्रों में वाणिज्यिक उत्पादन आरंभ हुआ और अब वैश्विक ग्राहकों तक चिप पहुंचने लगी। इससे देश में रिकॉर्ड समय में चिप डिजाइन, उपकरण निर्माण और परीक्षण क्षमताओं का विकास हुआ है। सेमीकॉन इंडिया 2026 कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह जानकारी दी और 13.5 अरब डॉलर के सेमीकंडक्टर मिशन के दूसरे चरण की घोषणा की। साथ ही, नए नियामक सुधारों का उल्लेख किया जो अंतरराष्ट्रीय कंपनियों, स्टार्टअप और डिजाइन फर्म के बीच सहयोग को सुगम बनाएंगे।



पिछले 15 दिनों की उपलब्धियां...

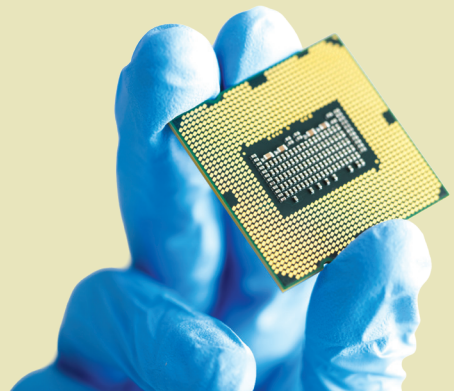
3,000 किलोमीटर लंबे समर्पित माल ढुलाई गलियारे की शुरुआत।

- 7.8% की दर से पहली तिमाही में बढ़ी जीडीपी।
- ब्रिक्स के दिल्ली घोषणापत्र को सर्वसम्मति से सदस्य राष्ट्रों ने स्वीकार किया।
- मुंबई में ग्लोबल फिनटेक फेस्ट हुआ। जिसमें एजेंटिक एआई और क्वांटम टेक्नोलॉजी के जरिए इंक्लूसिव फाइनेंस पर चर्चा हुई।

पीएम मोदी की खास बातें...

20% से ज्यादा रही है सेमीकंडक्टर मार्केट की ग्रोथ बीते दो वर्षों में, इस ग्रोथ की बड़ी वजह एआई से पैदा हुई डिमांड है।

- एक लाख इंजीनियरिंग छात्रों को प्रशिक्षित करने की सरकार की महत्वाकांक्षी योजना, जिनमें से 70 हजार का प्रशिक्षण पूर्ण।
- 60 गीगावॉट से ज्यादा सोलर एनर्जी क्षमता, जो एक दशक पहले करीब दो गीगावॉट थी।





सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम तैयार करने में दशकों का समय लगता है लेकिन भारत ने कम समय में बड़ी कामयाबी हासिल की है। देश ने इन सभी क्षेत्रों पर एक साथ काम किया।

- चिप डिजाइन और मैन्युफैक्चरिंग।
- उपकरण और रॉ-मैटिरियल सप्लाई।
- चिप टेस्टिंग क्षमताएं।

जो यंग टैलेंट भारत में रिसर्च कर रहे हैं, वे आगे आएं। जो युवा विदेशों में रिसर्च कर रहे हैं...वे भी भारत में एडवांस टेक्नोलॉजी के डेवेलपमेंट से जुड़ें।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।



'उड़ान' के 10 वर्ष

कनेक्टिविटी भी...
आत्मनिर्भर भारत को मजबूती भी

मैं चाहता हूं कि हवाई जहाज में हवाई चप्पल वाले लोग दिखाई दें। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उड़ान योजना की पहली फ्लाइट के शुभारंभ पर यह शब्द कहे थे... और आज उड़ान के आंकड़े बता रहे हैं कि 1.66 करोड़ से अधिक लोग इस सस्ती-किफायती हवाई सेवा का लाभ ले चुके हैं। 4 जुलाई, 2026 को इस योजना के संशोधित और नए चरण की शुरुआत हुई। इस योजना में न सिर्फ 120 नए गंतव्यों और 4 करोड़ यात्रियों तक पहुंच का लक्ष्य है बल्कि इससे मिलेगी घरेलू एयरोस्पेस सेक्टर और आत्मनिर्भर भारत को मजबूती...

आजादी के बाद देश में पहली बार एविएशन पॉलिसी वर्तमान केंद्र सरकार ने बनाई। इसके बाद 21 अक्टूबर, 2016 को क्षेत्रीय हवाई संपर्क योजना 'उड़ान' यानी उड़े देश का आम नागरिक को मंजूरी दी गई। इस योजना की पहली फ्लाइट 27 अप्रैल, 2017 को शुरू हुई। योजना की शुरुआत के 10 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इन 10 वर्षों में उड़ान योजना ने 679 मार्गों का परिचालन शुरू किया। 95 हवाई अड्डों, हेलीपोर्ट और जल एयरोड्रोम को जोड़कर क्षेत्रीय हवाई संपर्क में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। इस किफायती सेवा का जुलाई, 2026 तक 1.68 करोड़ से अधिक यात्रियों ने लाभ उठाया है।

> *"हमारी सरकार ने उड़ान योजना को और विस्तार दिया है, जिसके तहत आने वाले वर्षों में छोटे-छोटे शहरों में 100 नए एयरपोर्ट और 200 नए हेलीपैड बनाने की योजना है। इस योजना ने भारत के विमानन क्षेत्र में आमूल-चूल बदलाव ला दिया है।*
>
> *-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री*

भारत की आकांक्षाओं का उत्सव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'हवाई चप्पल से हवाई जहाज' तक के दृष्टिकोण को 21 अक्टूबर, 2016 को शुरू उड़ान योजना ने एक राष्ट्रीय आंदोलन में बदल दिया है। यह योजना हवाई यात्रा को हर भारतीय की पहुंच में और आसान बना रही है। आज, उड़ान केवल एक कनेक्टिविटी योजना नहीं है बल्कि यह भारत के सपनों का उत्सव है जो किसानों, छात्रों, कारीगरों और व्यापारियों को आगे बढ़ने के नए मौके देता है। टियर-2 और टियर-3 शहरों से लेकर दूरदराज के क्षेत्रों तक, विमानन आर्थिक विकास, पर्यटन, रोजगार और सामाजिक समावेश का एक शक्तिशाली इंजन बन गया है।

भारत की विमानन यात्रा में एक और नया अध्याय

इस योजना की सफलता और अनुभवों को देखते हुए योजना को नया रूप दिया गया, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने 25 मार्च, 2026 को मंजूरी दी। इस संशोधित उड़ान योजना की 4 अप्रैल, 2026 को शुरुआत हो चुकी है जो देशभर में टियर-2 एवं टियर-3 शहरों और दूरस्थ क्षेत्रों में क्षेत्रीय हवाई संपर्क को बढ़ावा देगी। अगले दस वर्षों की अवधि में लगभग 29,000 करोड़ रुपये इस पर खर्च किए जाएंगे ताकि नागरिक उड्डयन आधारित विकास को गति प्रदान की जा सके। योजना में मौजूदा सेवा के लिए अनुपलब्ध हवाई पट्टियों में से 100 हवाई अड्डों का विकास और पर्वतीय, पूर्वोत्तर एवं आकांक्षी (एबआईएनईआर) क्षेत्रों में 200 हेलीपोर्ट का विकास शामिल है। यह योजना 'विकसित भारत 2047' के संकल्प को साकार करने की दिशा में प्रभावी प्रगति सुनिश्चित करेगी। यह नया चरण अंतिम मील कनेक्टिविटी को और मजबूत करेगा। यह सुनिश्चित करेगा कि 'सबकी उड़ान, सबका विकास' का दृष्टिकोण देश के हर कोने में एक वास्तविकता बन जाए। ■

अंतरराष्ट्रीय नागर विमानन संगठन (ICAO) के अध्ययन 'इकोनॉमिक बेनिफिट्स ऑफ सिविल एविएशन: रिपल्स ऑफ प्रॉस्पेरिटी' के अनुसार, हवाई संपर्क में एक रुपये खर्च से अर्थव्यवस्था पर उसका प्रभाव 3.25 गुना होता है जबकि रोजगार में 6.1 गुना प्रभाव होता है।

आत्मनिर्भर भारत को मिलेगी मजबूती

उड़ान योजना के नए चरण में दूर-दराज और दुर्गम इलाकों के लिए दो 'ध्रुव' हेलीकॉप्टर और दो 'डोर्नियर' विमान खरीदे जाएंगे। इससे छोटे विमानों की कमी दूर होगी और 'आत्मनिर्भर भारत' के तहत देश के विमानन उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा। क्षेत्रीय मार्ग पर उड़ानों को लंबे समय तक चालू रखने और नियमित यात्रियों की संख्या बढ़ाने के लिए, इस योजना में वीजीएफ सहायता को 5 साल तक बढ़ाने की व्यवस्था की गई है।





अन्नपूर्णा योजना की 3,000 रुपये की चौथी किस्त जारी

बंगाल की महिलाओं का नया सामर्थ्य

पश्चिम बंगाल ने इस वर्ष चार मई को परिवर्तन का एक नया रास्ता चुना और इसमें महिलाओं ने अहम भूमिका निभाई। महिलाओं को आत्मनिर्भर और उनके जीवन को सहज बनाने के लिए केंद्र और राज्य सरकार मिलकर योजनाओं को जल्द से जल्द कर रही है लागू...

घर में माताओं-बहनों के कंधों पर बहुत सारी जिम्मेदारियां होती हैं। महिला हर तरीके से परिवार का ख्याल रखती है। जब उनके पास जरूरी खर्चों की चिंता कम होती है, तो उनका आत्मविश्वास और भी बढ़ जाता है। इसी उद्देश्य से पश्चिम बंगाल सरकार ने अन्नपूर्णा योजना शुरू की है। योजना के तहत 17 सितंबर को 1.5 करोड़ महिलाओं के खाते में तीन-तीन हजार रुपये भेजे गए। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह बंगाल की महिलाओं के आत्मविश्वास को मजबूती देने का महत्वपूर्ण प्रयास है। सरकार का लक्ष्य है कि एक भी पात्र महिला योजना के लाभ से वंचित न रहे। यह पैसा किसी मां के लिए बच्चे की पढ़ाई का खर्च हो सकता है। किसी बहन के लिए दवा या घर की जरूरी चीजें खरीदने का सहारा हो सकता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमारी सोच है, बंगाल की महिलाओं के पास फैसले की ताकत भी हो और आगे बढ़ने का हौसला भी हो। इसमें अन्नपूर्णा योजना की बड़ी भूमिका है। नई सरकार के सामने सबसे पहली कसौटी यही रही कि बंगाल की

जीवन चक्र से जुड़ी हर समस्या का समाधान सर्वोच्च प्राथमिकता

गर्भावस्था के दौरान पौष्टिक खाना मिले	मातृ वंदना योजना
बेटी को कोख में ही न समाप्त कर दिया जाए	बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ
शौचालय न होने से स्कूल न छोड़े	करोड़ों शौचालय बनाए
बेटी की शिक्षा जारी रहे	सुकन्या समृद्धि योजना
बेटी सैनिक स्कूल जाना चाहे	सैनिक स्कूल के द्वार खोले
बेटी बड़ी होकर अपना काम कर सके	बिना गारंटी लोन वाली मुद्रा योजना
मां बनने के बाद नौकरी जारी रख सके	मातृत्व अवकाश में वृद्धि
बेटी को गांव में कमाई के नए अवसर मिलें	सेल्फ हेल्प ग्रुप
रसोई में लकड़ी का धुआं न सहना पड़े	उज्ज्वला का गैस कनेक्शन
पानी के इंतजाम में परेशान न होना पड़े	हर घर नल से जल योजना
अंधेरे में न रहना पड़े	सौभाग्य योजना से मुफ्त बिजली कनेक्शन
बेटी पैसे की वजह से बीमारी न छिपाए	आयुष्मान कार्ड
बेटी को बैंकों का लाभ मिले	जनधन योजना
बेटी का घर की संपत्ति पर भी अधिकार हो	पीएम आवास





माताओं, बहनों और बेटियों के जीवन चक्र से जुड़ी हर समस्या का समाधान करना सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। हम सब मिलकर एक नए बंगाल का निर्माण करेंगे। एक विकसित बंगाल की ताकत से विकसित भारत का संकल्प और भी मजबूत होगा।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

महिलाओं का जीवन आसान हो, उनके जीवन में ईज ऑफ लिविंग बढ़े। इसलिए हम जिस मूल मंत्र को लेकर चले, वो है - कोथा कॉम, काज बेशी! यानी बातें कम, काम ज्यादा। अन्नपूर्णा योजना की शुरुआत इसी सोच के साथ हुई है। सरकार बनने के कुछ ही दिनों के भीतर इस योजना पर काम शुरू हुआ। इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं के बैंक खाते में पैसा पहुंचना शुरू हो गया है। कोई कट मनी नहीं, कोई बिचौलिया नहीं। एखोन बांग्लाए काटमानी चोले ना!

50 लाख नए गरीब परिवारों को मिलेंगे पक्के घर

बीते 12 वर्षों में केंद्र की कई योजनाओं का लाभ बंगाल में समय पर नहीं पहुंच पाया। इससे गरीब परिवारों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। अब सरकार में इन रुकी हुई योजनाओं को तेज गति से आगे बढ़ाया गया है। बंगाल में नई सरकार बनने के बाद 50 लाख से ज्यादा ऐसे नए गरीब परिवारों की पहचान की गई है, जिनको पीएम आवास योजना में पक्के घर दिए जाएंगे। पीएम विश्वकर्मा योजना को भी यहां लागू किया गया है। हर लंबित योजना, हर अटकी हुई परियोजना, अब बंगाल में नई गति पकड़ रही है। ■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

‘पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन का भविष्य’ विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण

भारत ने अपनी ठोस नीतियों से यह साबित कर दिखाया है कि विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों एक साथ संभव हैं। बीते एक दशक में पर्यावरण के हर मोर्चे पर देश ने अभूतपूर्व प्रगति की है। इसी का नतीजा है कि जी-20 देशों में भारत अकेला ऐसा देश बना, जिसने पेरिस कॉप-21 समझौते के लक्ष्यों को समय से पहले हासिल किया। 19 सितंबर को ‘पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन का भविष्य’ विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज भारत का प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन वैश्विक औसत के आधे से भी है कम...

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्बन फुटप्रिंट के बारे में वैश्विक स्तर पर फैली गलत धारणा के संबंध में कहा कि विकासशील देशों को अनुचित रूप से दोषी ठहराया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि विकसित देश प्रति व्यक्ति भारत की तुलना में छह गुना अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं। भारत विश्व को साथ लेकर पर्यावरण संरक्षण के नए मानदंड स्थापित कर रहा है। देश ने गैर-जीवाश्म ईंधन और सौर ऊर्जा क्षमता में वैश्विक मानक स्थापित किया है।





स्वच्छ ऊर्जा

12 साल में सौर ऊर्जा की क्षमता 2 गीगावाट से बढ़कर 160 गीगावाट से अधिक हो गई है।

30 लाख किसानों को कुसुम योजना के तहत सौर पंप मिले।

50 लाख घरों को सौर ऊर्जा से जोड़ा गया, प्रत्येक घर को 80 हजार रुपये तक की वित्तीय सहायता।

200 मिलियन टन कार्बन उत्सर्जन कम हुआ 'वन नेशन-वन ग्रिड' की मदद से।

■ चार गुना बढ़ी है गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता सरकार के प्रयासों से।



स्वच्छ और आधुनिक परिवहन

■ देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन स्वच्छ और हरित परिवहन की दिशा में बड़ी उपलब्धि।

■ 25 लाख हुई इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री पिछले वर्ष, 2014 से पहले यह संख्या तीन हजार से भी कम थी। बिक्री में 950 गुना की वृद्धि।

20 से अधिक शहरों में मेट्रो नेटवर्क, 2014 में मात्र पांच शहरों तक थी पहुंच।





"बीते 12 वर्षों में पर्यावरण से जुड़े हर क्षेत्र में, हर सेक्टर में... भारत ने असाधारण प्रगति की है। हमारा बड़ा फोकस रिन्यूबल एनर्जी पर रहा है और इसने पर्यावरण सुरक्षा में बड़ी भूमिका निभाई है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

जल संरक्षण से प्राकृतिक कृषि

■ जल संरक्षणः 70 हजार से अधिक अमृत सरोवर और 1.5 करोड़ वर्षा जल संचयन संरचना का निर्माण 'कैच द रेन' अभियान के तहत।

■ 2 करोड़ से अधिक किसानों को 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' और 'हर बूंद, अधिक फसल' का लाभ।

■ 12.5 लाख हेक्टेयर में फैले 24,00 प्राकृतिक कृषि समूहों की स्थापना राष्ट्रीय प्राकृतिक कृषि मिशन के तहत।

■ तीन हजार फसलों का जलवायु के अनुकूल विकास।

■ पिछले 12 वर्ष में सघन वन क्षेत्रों में 22% से अधिक की वृद्धि।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।



राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान किए

भारतीय फिल्मों में भविष्य की संभावनाएं

भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने वर्ष 2024 के लिए 22 सितंबर को गुजरात के केवड़िया स्थित एकता नगर में आयोजित समारोह में 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान किए। भारतीय सिनेमा में असाधारण योगदान के लिए दिग्गज अभिनेता अनंत नाग को दादासाहब फाल्के सहित अन्य विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। राष्ट्रपति ने पुरस्कार विजेताओं को उनकी प्रतिभा, समर्पण और कड़ी मेहनत के लिए बधाई दी और कहा कि भारतीय फिल्मों में भारत के लोगों के सपने, परम्पराएं, संघर्ष और हैं भविष्य की संभावनाएं...

स्टार वही जो रोशनी लाएं, अंधेरा नहीं

पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि जो फिल्म कलाकार बहुत लोकप्रिय होते हैं उनमें देशवासियों विशेषकर युवाओं को, प्रभावित करने की असीम क्षमता होती है। जब सफल फिल्म कलाकार अनुशासित जीवनशैली के फायदे के बारे में बताते हैं तो करोड़ों बच्चे और युवा उनका अनुकरण करते हैं। मैं यह अनुरोध करना चाहूंगी कि लोकप्रिय कलाकार स्वास्थ्य के लिए हानिकारकर पदार्थों का समर्थन न करें। स्टार वही जो रोशनी लाएं, अंधेरा नहीं।



दिल्ली से बाहर एकता नगर में आयोजित फिल्म पुरस्कार समारोह

72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में

34 भाषाओं की 400 फीचर फिल्मों और

24 भाषाओं की 161 नॉन-फीचर फिल्मों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं।

- इनमें से 22 फीचर फिल्म और 23 नॉन-फीचर फिल्म श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए गए।
- भारतीय सिनेमा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और ग्लोबल स्टोरीटेलिंग के एक सशक्त माध्यम के रूप में लगातार समृद्ध हो रहा है।
- दिल्ली से बाहर एकता नगर में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार आयोजित करना एक महत्वपूर्ण पहल, जो सरदार वल्लभभाई पटेल की राष्ट्रीय एकता की दृष्टि और प्रतिबद्धता से प्रेरित है।



- ब्रह्मयुगम के लिए ममूटी और चंदू चैंपियन के लिए कार्तिक आर्यन को संयुक्त रूप से बेस्ट एक्टर इन ए लीडिंग रोल का अवॉर्ड।



- यामी गौतम को फिल्म आर्टिकल 370 के लिए बेस्ट एक्ट्रेस इन ए लीडिंग रोल का पुरस्कार मिला।
- आर्टिकल 370 को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार मिला
- सहायक भूमिका की श्रेणी में संजय मिश्रा को फिल्म भक्षक के लिए बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर चुना गया।
- सहायक भूमिका अभिनेत्री का अवार्ड फिल्म महाराजा के लिए सचना नामिदास और मिथ्या के लिए रूपाश्री वरकडी को संयुक्त रूप से मिला।
- कल्कि 2898 एडी को संपूर्ण मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय फिल्म घोषित किया गया।
- रणदीप हुड्डा के निर्देशन में बनी फिल्म स्वातंत्र्य वीर सावरकर के लिए उन्हें बेस्ट डेब्यू डायरेक्टर का पुरस्कार मिला।

72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

देश के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थलों पर आयोजित किए जाएंगे राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार को देश के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थलों पर ले जाया जा रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुसार राष्ट्रीय कार्यक्रमों को पारंपरिक स्थलों से आगे ले जाकर देश भर की जगहों से जोड़ने की बात की। उन्होंने राज्यों को अगले राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों के आयोजन के लिए अपने सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थल प्रस्तावित करने का निमंत्रण दिया। इससे राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार सिर्फ सम्मेलन कक्ष तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उससे आगे बढ़कर आम लोगों तक पहुंचेंगे।

गुजरात ने किया राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का भव्य स्वागत

गुजरात में आयोजित इस समारोह ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की यात्रा में एक नए अध्याय की शुरुआत की। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने दिल्ली से बाहर राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार आयोजित करने की नई परंपरा शुरू करने के लिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल की विरासत और सामर्थ्य से जुड़े केवड़िया स्थित एकता नगर में इस प्रतिष्ठित पुरस्कार समारोह की मेजबानी करना गुजरात के लिए गर्व की बात है। ■



केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने किया बारापुला फेज-3 एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन

राजधानी की कनेक्टिविटी को नई रफ्तार

वर्ष 2047 तक भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है। राजधानी दिल्ली उस विकास यात्रा का दर्पण है। इसी दृष्टिकोण से केंद्र सरकार यहां निरंतर इंफ्रास्ट्रक्चर विस्तार का काम कर रही है। इसी कड़ी में 29 सितंबर को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बारापुला फेज-3 कॉरिडोर का उद्घाटन किया जिससे दिल्ली और आसपास के लोगों को बिना रुकावट कनेक्टिविटी मिलेगी, साथ ही ईंधन और समय की भी होगी बचत...

दिल्ली की विकास यात्रा का महत्वपूर्ण अध्याय

देश की राजधानी के विकास की यात्रा में एक और महत्वपूर्ण अध्याय तब जुड़ा जब केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने 1,941 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया।

- लंबे समय से लंबित बारापुला एलिवेटेड रोड फेज-3 अब दिल्लीवासियों की सेवा में समर्पित है।
- इससे मयूर विहार फेज-1 से एम्स तक सिग्नल-फ्री सफर होगा। जाम कम होगा, समय बचेगा और लाखों लोगों का रोज का सफर आसान होगा।
- मुकरबा चौक अंडरपास के साथ मोदी मिल-सावित्री सिनेमा फ्लाईओवर और लोनी अंडरपास से भी दिल्ली की कनेक्टिविटी को नई मजबूती मिलेगी।
- समय की बचत, सफर को आसान और जीवन में सुविधा बढ़ाने के उद्देश्य से तेज गति से हो रहे हैं काम।



PMO India ✓
@PMOIndia

Free Trade Agreements हमारे युवाओं के लिए संभावनाओं के नए द्वार बना रहे हैं।

इस तरह के trade agreements से हमारे entrepreneurs के लिए नई partnerships के रास्ते खुलते हैं, नए markets के रास्ते खुलते हैं और हमारे युवाओं के लिए career में नई possibilities बनती हैं: PM @narendramodi



Rajnath Singh ✓ @rajnathsingh

तकनीक को आम नागरिक की ज़िंदगी का हिस्सा बनाकर जीवन आसान बनाना ही मोदी जी का विज़न है।

जनधन, UPI, आयुष्मान भारत और 5G नेटवर्क जैसी पहलों के माध्यम से प्रधानमंत्री @narendramodi जी ने भारत को 'विकसित भारत' के संकल्प की ओर तेज़ी से आगे बढ़ाया है। उनके इन प्रयासों ने जनविश्वास को और मजबूत किया है।



Amit Shah ✓
@AmitShah

आने वाले दिनों में नशामुक्त मित्र देश के 10 लाख स्कूलों, कॉलेजों और शिक्षण संस्थानों तक पहुंचकर युवाओं को जागरूक करेंगे।



Nitin Gadkari ✓ @nitin_gadkari

Under the visionary leadership of Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji, Ayushman Bharat has emerged as a transformative force in India's healthcare journey, ensuring that quality healthcare is more accessible, affordable and people-centric.



Nirmala Sitharaman Office ✓
@nsitharamanoffc

In 2014, Hon'ble PM Shri @narendramodi opened the doors of banking to everyone through PM Jan Dhan accounts, without requiring a minimum balance.

In 2015, PM MUDRA Yojana enabled small entrepreneurs to access loans without collateral.

By repaying their loans on time, beneficiaries have been able to access higher amounts, strengthen their credit profiles and build greater credibility with banks.

Today, many are growing their businesses and accessing regular banking facilities.



Kiren Rijiju ✓
@KirenRijiju

Union Cabinet, under the leadership of Hon'ble PM Shri @narendramodi ji, approves enhancement of the wage ceiling for mandatory #EPFO coverage from ₹15,000 to ₹25,000 per month.
The decision is expected to bring 51 lakh+ additional employees under mandatory EPFO coverage.

आयुष्मान भारत के तहत चिकित्सा खर्च में रिकार्ड बचत : मोदी

नई दिल्ली, प्रेट : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि आयुष्मान भारत के तहत अब 60 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को सालाना पांच लाख रुपये स्वास्थ्य कवरेज का लाभ मिल रहा है। इससे चिकित्सा खर्च में रिकार्ड बचत हुई है। फलस्वरूप गरीब तथा मध्यम वर्ग को लाभ मिला है।

बुधवार को योजना के आठ साल पूरे होने पर पीएम ने एक्स पर लिखा कि आयुष्मान भारत योजना इस सोच के साथ शुरू की गई थी कि प्रत्येक भारतीय को गुणवत्तापूर्ण व किफायती स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध होनी चाहिए। आज 60 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को इसका लाभ मिल रहा है, जिससे यह दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना बन गई है। आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में अब तक 500 करोड़ से अधिक लोगों की पहुंच दर्ज की गई है, जिससे जमीनी स्तर पर प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा मजबूत हुई है।

- **योजना के आठ साल पूरे होने पर कहा, 60 करोड़ लाभार्थियों को मिल रहा फायदा**
- **प्रत्येक भारतीय को बेहतर स्वास्थ्य सेवा देने के लिए शुरू किया गया था कार्यक्रम**



प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ● फाइल फोटो

स्वस्थ नागरिक विजन के साथ बढ़ रही योजना

भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना स्वस्थ नागरिक और मजबूत देश के दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में शुरू की गई इस योजना ने देशभर में नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सेवा को अधिक सुलभ बनाने की दिशा में एक नया अध्याय खोला है।

48.54 करोड़ आयुष्मान कार्ड बने : स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत अब तक 48.54 करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। 13 करोड़ से अधिक लोगों ने इलाज का लाभ उठाया है तथा देशभर में 39 हजार से अधिक सूचीबद्ध सरकारी एवं निजी अस्पतालों के माध्यम से लोगों को दो लाख करोड़ रुपये से अधिक के उपचार का लाभ मिला है। आयुष्मान भारत योजना 23 सितंबर, 2018 को शुरू की गई थी। 31 अगस्त तक 13.25 करोड़ लोगों के उपचार के लिए 2.03 लाख करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध कराई जा चुकी है।

चिंतन शिविर में 68 मंत्रियों के साथ प्रधानमंत्री ने की चर्चा

विकसित भारत के लक्ष्य पर तेजी से हो रहा काम

मंथन

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में 'सेवातीर्थ' में व्यक्तिगत विकास की राह से शुरू हुआ दो दिवसीय महामंथन देश को 'विकसित भारत' की राह पर तेजी से दौड़ाने के संकल्प के साथ थमा। फोकस इस बात पर रहा कि आम नागरिक का जीवन आसान कैसे बने और सरकारी योजनाएं बिना किसी देरी के हर चौखट तक कैसे पहुंचें।

प्रधानमंत्री कार्यालय के नए परिसर सेवातीर्थ में दो दिवसीय चिंतन शिविर की शुरुआत बुधवार को 'रथ का विकास' विषय के साथ हुई। सूत्रों ने बताया कि शिविर के दौरान व्यापक मंथन का केंद्र 'विकसित भारत' के लक्ष्य को गति देना और शासन व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाना रहा। इसमें मंत्रियों और उनके मंत्रालयों से जुड़े शासन, राजनीतिक कार्यप्रणाली और व्यक्तिगत स्तर से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई।

जानकारी के अनुसार, चिंतन शिविर में कुल 68 केंद्रीय मंत्रियों ने हिस्सा लिया। मंत्रियों को चार मुख्य समूहों में विभाजित किया गया था और प्रत्येक समूह में 17 मंत्री शामिल थे। चर्चा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए समूहों को आगे उप-समूहों में भी विभाजित किया गया। चिंतन शिविर की खास बात यह रही कि यह केवल चुनिंदा मंत्रियों या कुछ प्रस्तुतियों तक ही सीमित नहीं रहा। प्रधानमंत्री मोदी के समक्ष आठ प्रस्तुतियां दी गईं। लेकिन इस बार सभी 68 मंत्रियों को व्यापक चर्चा और मंथन की प्रक्रिया में शामिल किया गया। प्रत्येक प्रस्तुति के लिए लगभग एक घंटे का समय था।



युवाओं से संवाद करते पीएम मोदी।

सेवा के मार्ग से कभी नहीं होंगे विचलित : प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी। मोदी ने भाजपा के 'सेवा संकल्प यात्रा' में शामिल युवाओं के साथ संवाद किया। इस दौरान कहा कि सेवा ही भाजपा के संस्कारों का मूल भाव रही है और पार्टी सेवा के मार्ग से कभी विचलित नहीं होगी। हमारे आचरण से लोगों को पता चले कि राजनीति में हमें कितनी ही बड़ी सत्ता क्यों न मिल जाए, लेकिन हमारा मूल मार्ग सेवा का ही रहेगा। हम कभी भी सेवा के मार्ग से विचलित नहीं होंगे, भले ही हम कितने ही ऊंचे शिखर पर पहुंच जाएं।

राष्ट्र निर्माण के संकल्प को दोहराया युवाओं से प्रधानमंत्री ने कहा कि राजनीति, चुनाव और शासन व्यवस्था अपनी जगह है, लेकिन हम राष्ट्र निर्माण और विकसित भारत के संकल्प को लेकर निकले हैं। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का संकल्प पूरा करने में युवा पीढ़ी की भूमिका अहम रहने वाली है।

प्रधानमंत्री ने विश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी से की भेंट

विश्वेशतीर्थ स्वामी की जन्मशताब्दी समारोह का लोगो जारी



लोगो का अनावरण करते पीएम मोदी व विश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी।

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नई दिल्ली, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कर्नाटक के उडुपी स्थित पेजावर अधोक्षज मठ के विश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी से भेंट की। इस दौरान उन्होंने पद्म विभूषण यतीकुल चक्रवर्ती विश्वेशतीर्थ स्वामी की जन्मशताब्दी समारोह के लोगो का अनावरण किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि विश्वेशतीर्थ स्वामी का भक्ति, विद्या और सेवा से परिपूर्ण जीवन आज भी असंख्य लोगों को प्रेरित करता है। उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर होने वाली विभिन्न पहल उनके आदर्शों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगी। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया पोस्ट में विश्वेशतीर्थ स्वामी के जीवन और योगदान को स्मरण किया। इस अवसर पर केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

सेवा यात्रा को विकसित भारत-2047 के राष्ट्र निर्माण से जोड़ा

सेवा की भावना को जमीन तक पहुंचाने में युवाओं की अहम भूमिका : पीएम मोदी

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नई दिल्ली, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सेवा का अर्थ केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करना नहीं है। लोगों से जुड़ना, समाज को समझना और सेवा की भावना को काम में बदलना भी इसका हिस्सा है। उन्होंने कहा कि सेवा की भावना को जमीनी स्तर तक पहुंचाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि जीवन का मुख्य उद्देश्य सेवा हर व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से होनी चाहिए। राजनीति में भी, सर्वोच्च पद पर पहुंचने के बाद सेवा ही मार्गदर्शक सिद्धांत रहना चाहिए।

मोदी ने गुरुवार को भाजपा के 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत वडनगर से वाराणसी तक निकाली जा रही 'सेवा संकल्प यात्रा' में शामिल युवाओं से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संवाद किया। उन्होंने युवाओं से यात्रा के अनुभव, ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों से हुई बातचीत और इस दौरान मिली सीख के बारे में जाना। प्रधानमंत्री ने सेवा यात्राओं से जुड़े अपने अनुभव भी साझा किए और वडनगर-वाराणसी मार्ग से अपने जुड़ाव का उल्लेख किया।

'सीधे संवाद से मिली नई ऊर्जा'

भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमांग जोशी ने प्रधानमंत्री के साथ संवाद को यात्रा में शामिल युवाओं के लिए खास अनुभव बताया। उन्होंने कहा कि कई दिनों तक साथियों पर रहने, गांवों में जाने, लाभार्थियों से मिलने और अलग-अलग सेवा कार्यों में भाग लेने के बाद प्रधानमंत्री को सीधे सुनना पूरी यात्रा के लिए नई ऊर्जा देने वाला रहा। जोशी ने कहा कि मोदी के 25 वर्ष के सार्वजनिक जीवन से युवाओं को यह सीख मिलती है कि सेवा किसी एक अवसर तक सीमित गतिविधि नहीं, बल्कि समाज और देश के प्रति लगातार जारी रहने वाली प्रतिबद्धता है।

अभियान में युवाओं की भागीदारी जरूरी

प्रधानमंत्री ने युवाओं की इस पहल को 'विकसित भारत-2047' के राष्ट्र निर्माण के बड़े लक्ष्य से जोड़ते हुए कहा कि सेवा की भावना को समाज के अंतिम स्तर तक पहुंचाने के लिए युवाओं की भागीदारी जरूरी है। भाजपा ने प्रधानमंत्री के जनप्रतिनिधि के रूप में 25 वर्ष पूरे होने के मौके पर 17 सितंबर से एक महीने का 'सेवा संकल्प अभियान' शुरू किया है।

10-10 टीमों की यात्रा

अभियान के तहत वडनगर से वाराणसी और वाराणसी से वडनगर के बीच 10-10 टीमें यात्रा कर रही हैं। इनमें करीब एक हजार युवा शामिल हैं। यात्रा के दौरान युवाओं की गांवों में पहुंच, लोगों से संवाद और विभिन्न सेवा गतिविधियों में भागीदारी पर जोर दिया जा रहा है।



असम के मोरीगांव में विश्व गैंडा दिवस के अवसर पर मंगलवार पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य में दिवसभर करवा एक सींग वाला गैंडा। ● रॉ

मोदी ने गैंडा संरक्षण के प्रयासों को सराहा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को देश में गैंडा संरक्षण के प्रयासों की सराहना की। साथ ही कहा कि इस संकटग्रस्त प्रजाति के संरक्षण, उसके पर्यावास के प्रबंधन और उसकी संख्या की स्थिति को समझने के लिए संबंधित राज्यों को वित्तीय और तकनीकी सहायता के लिए 'प्रोजेक्ट राइनो' शुरू किया गया है। विश्व गैंडा दिवस पर मोदी ने कहा कि देश दुर्लभ एक सींग वाले गैंडे के संरक्षण पर गौरव व्यक्त करता है। साथ ही संरक्षण से जुड़े लोगों को सराहा।



आजाद हिंद सरकार का 83वां स्थापना दिवस

21 अक्टूबर 2026

आजाद हिंद फौज

चलाया प्रथम सैन्य अभियान

नेताजी सुभाष चंद्र बोस, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे नायक हैं जिनके स्मरण मात्र से मन में देशप्रेम का ज्वार उमड़ पड़ता है। उन्होंने युवाओं को संगठित कर आजाद हिंद फौज के माध्यम से प्रथम सैन्य अभियान चलाया। अंडमान-निकोबार में तिरंगा फहराकर वर्ष 1943 में ही आजाद भारत की घोषणा की। आजाद हिंद फौज के माध्यम से, नेताजी ने क्रांतिकारियों के दिलों में यह दृढ़ विश्वास जगाया कि देशवासी अपनी सेना और सैन्य अभियानों के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं स्वतंत्रता...



- नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 21 अक्टूबर 1943 को आजाद हिंद सरकार की स्थापना की थी। सरकार ने बैंक, मुद्रा और डाक टिकट भी शुरू किया था।
- नेताजी ने रानी झांसी रेजिमेंट की स्थापना से सशस्त्र बलों में महिलाओं को समान अवसर की नींव रखी थी।



“नेताजी का एक ही उद्देश्य था, एक ही मिशन था- भारत की आजादी। मां भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना। यही उनकी विचारधारा थी और यही उनका कर्मक्षेत्र था। ***- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री***

न्यू इंडिया समाचार
पाक्षिक

आर.एन.आई, DELHIN/2020/78812, 16-31 अक्टूबर, 2026

आरएनआई DELHIN/2020/78812 (प्रकाशन तिथि- 1 अक्टूबर 2026, कुल पृष्ठ-46)

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा, प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

प्रकाशक
कंचन प्रसाद
महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो

कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो,
सूचना भवन, द्वितीय तल,
नई दिल्ली- 110003 से प्रकाशित